बालसखा-पुस्तकमाला सं० १७

बाल-निबन्धमाला

—:o:—

लेखक

गंगाप्रसाद एम० ए०, एस-सी०

[नवीन संस्करण]

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९३४

मूल्य ॥

निवेदन

बाल-निबन्धमाला छप कर तैयार हो गई। इसमें बालकोपयोगी भिन्न भिन्न ३५ विषयों पर छोटे छोटे निबन्ध लिखे गये हैं। आशा है, इस उपदेशप्रद पुस्तक से बालकों को अनेक प्रकार की शिक्षायें मिलेंगी। यदि इस पुस्तक से बालकों को कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपना श्रम सफल समझूँगा।

लेखक

विषय-सूची

बाल-निबन्धमाला

१—निबन्ध लिखने की रीति

किसी विषय का पूरी तरह से बयान करना निबन्ध कहलाता है। अच्छा निबन्ध लिखने के लिए सबसे ज़रूरी बात यह है कि हमको उस विषय का पूरा पूरा ज्ञान हो। उदाहरण के लिए रेल को ले लो। जो मनुष्य यह नहीं जानता कि रेल-गाड़ी क्या चीज़ है, उसके बनाने की क्या तरकीब है, उससे क्या क्या फ़ायदे हैं, वह मनुष्य रेलगाड़ी पर निबन्ध नहीं लिख सकता। परन्तु भिन्न भिन्न चीज़ों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है कि हम अनेक पुस्तकें पढ़ें और दुनिया की चीज़ों का भले प्रकार अवलोकन करें। इसलिए सबसे अच्छा लेख वही लिख सकता है जो बहुत-सी किताबों को नित्य पढ़ता है, और उन पर विचार करता तथा अनेक चीज़ों को ध्यानपूर्वक देखता है। जब तक तुम पढ़ो नहीं, तुम विचार किस पर करोगे और जब तुम विचार नहीं कर सकते तो लिखोगे क्या? एक दिन के पढ़ने से ही अच्छे लेखक नहीं बन सकते। इस काम के लिए नित्य पढ़ना आवश्यक है।

जब कोई लेख लिखने बैठो तो पहले विचार लो कि तुमने उसकी बाबत क्या क्या पढ़ा है और उसके विषय में तुम क्या क्या जानते हो। सम्भव है कि जिस विषय पर तुमको आज लेख लिखना है उसकी बाबत तुमने पहले कभी कुछ न

पढ़ा हो। ऐसी हालत में भी अगर तुम और किताबें पढ़ते रहे हो तो इस नये विषय पर भी विचारने में आसानी होगी। पहले तो तुम इसको नया विषय समझ कर घबरा जाओगे। परन्तु, यदि, थोड़ी देर तक विचार करोगे तो बहुत-से ख़यालात स्वयं ही तुम्हारे मन में आने लगेंगे। जब कुछ ख़यालात मन में आने लगें तब उन सबके कई भाग कर लो, जिससे कहीं की बात कहीं न लिखी जाय। जो लोग ऐसा नहीं करते वे बिना सोचे समझे ऊटपटांग लिख मारते हैं और बहुत-सा लिख कर भी फ़ेल हो जाते हैं। जब तुम अपने मज़मून के कई भाग कर लोगे तो थोड़ा थोड़ा हर एक भाग की बाबत लिखने से बहुत हो जायगा। साधारण दशा में एक मज़मून के इतने भाग हो सकते हैं:— उदाहरण के लिए रेलगाड़ी को लो।

(१) रेलगाड़ी क्या है ?

(२) यह कैसे बनाई जाती है ?

(३) इससे क्या फ़ायदा या नुक़सान है ?

(४) इसके न होने से क्या नुक़सान या फ़ायदा होता ?

(५) नतीजा।

अब अगर एक एक भाग के नीचे दो दो पंक्तियाँ लिखी जायँ तो दस पंक्तियाँ हो सकती हैं। अगर तुम इतने भाग न करते तो यह बात सम्भव नहीं थी।

जो बात जिस भाग से सम्बन्ध रखती हो उसको उसी के नीचे लिखो। ऐसा न हो कि कहीं का कहीं लिख दिया जाय। जैसे अगर रेल के बनाने की तरकीब लिखते हुए उसके फ़ायदे लिखोगे या फ़ायदे लिखते हुए बनाने की तरकीब लिखोगे तो परीक्षक समझेगा कि तुमको अच्छा लेख लिखना नहीं

आता। जैसे टोपी की शोभा सिर पर ही है और जूता पैर में ही अच्छा लगता है, इसी प्रकार निबन्ध लिखने में हर एक बात को उसके नियत स्थान पर ही लिखना शोभा देता है। प्रत्येक भाग का बयान पृथक् पृथक् करो।

इसके पश्चात् देख लो कि तुम्हारे पास लिखने के लिए कितना समय है। यदि समय थोड़ा है, जैसा कि बहुधा परीक्षाओं में हुआ करता है तो उसी समय को थोड़ा थोड़ा सब विभागों के लिए बाँट दो। कहीं ऐसा न हो कि निबन्ध का एक भाग लिखने में ही सम्पूर्ण समय व्यतीत हो जाय। अगर हमारे पास लेख के लिए एक घंटा है और लेख के चार भाग हैं तो हम हर भाग के लिए १५ मिनट देंगे। इस तरह हर एक भाग में कुछ न कुछ लिखा जायगा। बहुत-से लड़के बिना सोचे लिखने लग जाते हैं और ज़रूरी बातों को छोड़ कर बेज़रूरी या कम-ज़रूरी बातों को विस्तारपूर्वक लिख देते हैं। इससे उनका लेख बिगड़ जाता है। जिस तरह अगर किसी का सिर हाथ भर लम्बा हो और पैर एक बालिश्त हो तो ऐसा मनुष्य बहुत बुरा लगेगा, इसी तरह अगर तुम्हारे लेख का एक भाग दूसरे से अधिक बढ़ जायगा तो शोभा न देगा। इसलिए विषय-विभाग के लिए समय-विभाग बड़ा ज़रूरी है।

लेख लिखते हुए इस बात का भी ध्यान रक्खो कि तुम्हारे शब्द रोचक और सरल हों। बड़े बड़े और कठिन शब्द डाल देने से भाषा की शोभा जाती रहती है और अशुद्धियाँ भी बहुत-सी हो जाती हैं। अगर तुमको कोई दोहा या चौपाई याद हो तो उसको भी लिख दो; परन्तु बहुत-से पद्य लिखना ठीक नहीं। किसी विद्वान् का कथन भी कहीं कहीं लिख देना अच्छा होगा। परन्तु ऐसे कथनों को उचित स्थान पर लिखना

चाहिए। जब तुम लेख लिख चुको तो दस मिनट में उसको फिर देख जाओ और जो कोई अशुद्धि देख पड़े तो उसे ठीक कर दो। अगर इन सब बातों का ख़याल रक्खोगे तो तुम्हारा लेख अवश्य अच्छा होगा।

२—सचाई

जिस वस्तु का जैसा ज्ञान हमारे मन में हो उसको वैसा ही कहना सत्य या सचाई है। अगर हम जानते हैं कि रामचन्द्र आज कल कलकत्ते में हैं, चाहे वे वहाँ न भी हों और हम यह कहें कि रामचन्द्र आज कलकत्ते में हैं तो हम सच कह रहे हैं। परन्तु यदि हमको मालूम है कि वे मथुरा में हैं और हम कहते हैं कि वे कलकत्ते में हैं तो यह हमारा झूठ है। इससे मालूम हो गया कि अपने ज्ञान के अनुकूल कहना ही सच और उससे विरुद्ध कहना झूठ कहाता है।

सचाई मनुष्य में सबसे बड़ा गुण है। जो सच्चा नहीं वह पशु से भी नीच है। क्योंकि झूठ पशु भी नहीं बोलते। विद्वानों ने सच को ही सबसे बड़ा तप माना है। श्रीतुलसीदासजी कहते हैं कि:—

"साँच बरोबर तप नहीं झूठ बरोबर पाप।
जाके हिर्दय साँच है, ताके हिर्दय आप॥"

दुनिया के सब काम सच ही से चलते हैं। जो मनुष्य सच बोलता है उसका सब मान करते हैं; उसी का विश्वास होता है। परन्तु जो मनुष्य झूठ बोलता है उसका कोई विश्वास नहीं करता। अगर सब लोग झूठ बोलने लगें तो कोई किसी का विश्वास न करे और दुनिया के सब काम बन्द हो जायँ। जब तुम बाज़ार

में तरकारी लेने जाते हो तो केवल विश्वास पर ही कुँजड़ी तुमको तरकारी तौल देती है। यदि उसे यह शङ्का हो कि तुम झूठ बोलते हो तो वह पहले पैसा लिये बिना तरकारी न दे और तुम बिना तरकारी लिये पैसा न दो; इस तरह कभी काम न चले। जब एक बार मनुष्य झूठ बोलता है तब उसकी कोई प्रतीति नहीं करता और यदि वह सच भी कहता हो तो भी झूठ समझते हैं। एक कवि कहता है:—

"भाँड़ पुकारे पीर वश, मिस समझै सब कोय।"

तुम सबने एक गड़रिये के लड़के का क़िस्सा सुना होगा, जो झूठ मूठ चिल्ला उठता था कि भेड़िया आया, भेड़िया आया। एक दिन भेड़िया सचमुच आ गया। परन्तु चिल्लाने पर किसी ने उसका विश्वास न किया और उसकी भेड़ों को भेड़िया ले गया। अगर वह झूठ न बोलता तो उसकी यह दशा न होती। इसी तरह जो लड़के रोज़ झूठ बोलते हैं उनका मास्टर साहब विश्वास नहीं करते और चाहे वे सचमुच ही बीमार क्यों न हों, उनकी बात झूठ समझ कर उनको सज़ा दी जाती है। इसलिए सचाई विश्वास की जड़ है। परमात्मा ने मनुष्य को ज़बान एक बहुमूल्य रत्न दिया है। इसलिए चाहिए कि झूठ बोल कर हम ज़बान को अपवित्र न करें। मनुजी महाराज कहते हैं कि ज़बान को सत्य से पवित्र करना चाहिए। जो मनुष्य पान से मुँह को सुशोभित करते हैं वे भूलते हैं। मुख का भूषण तो सत्य ही है। जो विद्वान् हैं वे केवल इसी भूषण को धारण करते हैं। देखो श्रीमहाराज हरिश्चन्द्र जी ने अनेक कष्ट सहे, परन्तु सत्य से न डिगे। इसी लिए आज तक उनका नाम चला आता है। जो मनुष्य सत्यवादी है उसकी आत्मा पवित्र हो जाती है। परन्तु झूठ बोलनेवाला चाहे कितने ही भूषण क्यों न

पहने, अपवित्र ही रहता है। अगर किसी बर्तन में कोई मैली चीज़ रख दो और उसे अच्छे वस्त्र से ढाँक दो तो भी उसकी दुर्गन्ध बर्तन को दूषित कर देगी। इसी तरह अगर अच्छे वस्त्र पहननेवाला मनुष्य भी झूठ बोले तो भी लोग उसे अपवित्र ही समझेंगे। पवित्र होना चाहो तो अवश्य सत्य बोलो।

जैसे चोर के पाँव नहीं होते इसी तरह झूठ के भी पाँव नहीं होते, अर्थात् झूठ बहुत दिनों तक छिप नहीं सकता। एक न एक दिन अवश्य प्रकट हो जाता है। फिर तो झूठ बोलनेवाले की बड़ी दुर्गति होती है। मनुष्य जो यह समझते हैं कि उनका झूठ कभी प्रकट न होगा, यह उनकी बड़ी भूल है। क्योंकि सत्य की सदा जय होती है और झूठ की सदा हार।

झूठ सब पापों का मूल है और सत्य सब पुण्यों की जड़। अगर हम झूठ बोलना छोड़ दें तो कभी चोरी आदि बुरे कर्म न करेंगे। मनुष्य जितने बुरे कर्म करता है वे सब केवल झूठ ही के कारण होते हैं। अगर आदमी झूठ न बोले तो उसे सदा यह खटका लगा रहेगा कि कहीं मुझसे कोई पूछ बैठा तो मुझे सत्य सत्य कहना पड़ेगा और बड़ी लज्जा होगी, इसलिए इस बुरे काम को न करूँ। परन्तु झूठ बोलनेवाला झट कह उठता है कि मैं बहाना कर दूँगा और बच जाऊँगा। इसलिए अन्य पापों से बचने के लिए झूठ से अवश्य बचना चाहिए।

अगर तुम झूठ से बचना चाहते हो और सत्य को ग्रहण करना चाहते हो तो तुमको चाहिए कि ईश्वर पर विश्वास करो और उसे हर वक्त और हर जगह अपने समीप समझो। कोई जगह ऐसी नहीं जहाँ ईश्वर न हो। ईश्वर तो अन्तर्यामी है। वह तो घट घट की जानता है। फिर तुम

उससे भागकर कहाँ जा सकते हो? तुम्हारे झूठ को वह फ़ौरन जान लेगा और तुम्हें दण्ड देगा। मनुष्यों से बचना आसान है, पर ईश्वर से आज तक कोई नहीं बच सका। इसलिए जो मनुष्य ईश्वर को अपना सर्वान्तर्यामी जानते हैं वे भूल कर भी झूठ नहीं बोलते। क्योंकि उनको ईश्वर का सदा डर बना रहता है। भला ऐसा कौन मनुष्य है जो एक राजा के जानते हुए उसके सामने झूठ बोले? इसी तरह जो मनुष्य ईश्वर को अपना अन्तर्यामी जानता है वह उसके हर वक़्त समीप रहते हुए कैसे झूठ बोल सकता है। इसलिए हमको चाहिए, कि ईश्वर पर विश्वास करें और झूठ कभी न बोलें।

३—विद्या

किसी वस्तु का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करना ही विद्या है। विद्या पढ़ने से मनुष्य के हृदय में प्रकाश हो जाता है। बिना विद्या के अन्धकार दूर नहीं होता। जिस तरह अँधेरे में हम कुछ देख नहीं सकते इसी तरह बिना विद्या के कुछ सोच नहीं सकते। लोगों का यह कहना बहुत ठीक है कि विद्वान् के चार आँखें होती हैं; दो बाहरी और दो भीतरी। जिन बातों को मूर्ख नहीं जान सकता उनको विद्वान् जान लेता है। बिना विद्या के मनुष्य पशु के समान होता है।

विद्या सब आभूषणों से अच्छा आभूषण है। जिस प्रकार पत्थर का एक बेडौल टुकड़ा पथरकट के हाथ में जाकर बड़ी बड़ी सुन्दर मूर्तियाँ बना देता है इसी प्रकार विद्या पढ़कर एक बेडौल मनुष्य भी सुडौल बन जाता है और उसके भीतरी गुण प्रकट होने लगते हैं। इसीलिए विद्वान् का सबसे अधिक मान होता

है। इतना मान राजा का भी नहीं होता। क्योंकि राजा का मान तो केवल अपने ही देश में होता है, परन्तु विद्वान् जहाँ कहीं चला जाय वहीं उसकी प्रतिष्ठा होती है। और उसके मरण के पश्चात् भी लोग उसका यश गाते हैं। विद्वान् राजा की प्रतिष्ठा भी क़ायम रखता है। क्योंकि वह पुस्तकें बनाकर राजाओं का नाम संसार में छोड़ जाता है। अगर वाल्मीकिजी महाराज रामायण में श्री महाराजा रामचन्द्रजी का चरित न लिखते तो आज उनको कौन जानता? इसलिए प्रतिष्ठा विद्या ही से प्राप्त होती है।

विद्या सब धनों से बड़ा धन है। जिस मनुष्य के पास विद्या है वह निर्धन भी कभी भूखों न मरेगा। क्योंकि विद्या उसको सदा धन देती रहेगी। इसके सिवा विद्या एक ऐसा धन है जिसको न तो कोई चोर चुरा सकता है, न राजा छीन सकता है। और धनों की रक्षा के लिए रात भर जागना पड़ता है, ताले कुंजी रखने पड़ते हैं, पर विद्या-धन की रक्षा के लिए परमात्मा ने हमको हृदयरूपी एक ऐसा सन्दूक़ दे दिया है कि न तो इसके ले जाने में कठिनाई होती है और न इसकी रक्षा ही दुर्लभ है। जहाँ कहीं चले जाओ, विद्या-धन तुम्हारे पास है। विद्या धन में और धनों से इतनी विशेषता है कि और धन तो ख़र्च करते करते एक दिन समाप्त हो जाते हैं परन्तु विद्या-धन ख़र्च करने ही से बढ़ता है। जितना जितना विद्या-धन तुम दूसरे लोगों को दोगे उतना ही यह धन बढ़ेगा।

संसार के सब काम विद्या ही से चलते हैं; बिना विद्या के हम कुछ नहीं कर सकते। देखो रेलगाड़ी, तार, जहाज़ वग़ैरः लोगों ने विद्या के बल से ही बनाये हैं। यदि लोग विद्या न पढ़ते तो न कपड़ा बुन सकते, न मकान बना सकते और न खेती-

बारी आदि ही कर सकते। जो जातियाँ विद्वान् नहीं हैं वे आज तक नंगी रहतीं, पत्तियाँ पहनतीं और जङ्गलों में रहती हैं। उनके पास न कपड़े हैं और न मकान। देखो विद्या के बिना उनकी कितनी दुर्गति है। विद्या ही के बल से लोग ज़मीन के भीतर से सोना चाँदी निकाल कर धनी बन जाते हैं। विद्या के द्वारा हम सहस्रों कोस दूर बैठे हुए अपने इष्ट मित्रों से पत्र-द्वारा बात-चीत कर सकते हैं। प्राचीन लोगों का इतिहास भी विद्या द्वारा ही हम तक पहुँचता है; इसलिए विद्या सबसे बड़ी चीज़ है।

विद्या केवल पुस्तकों के पढ़ने से ही प्राप्त नहीं होती, किन्तु चीज़ों को भले प्रकार देखने से भी प्राप्त होती है। जो लोग केवल किताबों के ही कीड़े हैं और संसार की चीज़ों का अवलोकन नहीं करते, उनको पूरी विद्या नहीं आ सकती। अगर हम विद्या चाहते हैं तो किताबों को पढ़कर उन पर विचार करें कि उनमें जो कुछ लिखा है वह ठीक भी है या नहीं, और चीज़ों की खूब देख भाल कर उस विचार को दृढ़ करें। बहुत-से ऐसे भी मनुष्य हैं जो किताब नहीं पढ़ सकते पर विद्वान् हैं क्योंकि उन्होंने चीज़ों की देख भाल कर उन पर विचार किया है। लाहौर के महाराजा रणजीतसिंह पढ़े लिखे न थे; परन्तु अच्छे अच्छे विद्वान् उनसे हार मानते थे। विद्या जहाँ कहीं मिले वहीं से ले लेना चाहिए। यह विचार मत करो कि अमुक मनुष्य तुमसे छोटा है। अगर वह तुमसे अधिक विद्वान् है तो तुम उसे बड़ा ही जानो। एक कवि कहता है:—

"उत्तम विद्या लीजिए यदपि नीच पै होय।
पड़ा अपावन ठौर में कंचन तजै न कोय॥"

अर्थात् जैसे बुरी जगह में पड़े हुए सोने को सब ले लेते हैं इसी तरह अपने से छोटे विद्वान् से भी विद्या सीख लेनी चाहिए।

४—ईश्वर

जिसने हमको और दुनिया की सब चीज़ों को बनाया है वही ईश्वर है, वही हम सबका पिता और माता है। वह हमको बहुत प्यार करता है। सब अच्छी अच्छी चीजें हमको ईश्वर ने ही दी हैं। देखो, हवा के बिना हम मिनट भर भी नहीं जी सकते। यह हवा हमको किसने दी? ईश्वर ही इसका देनेवाला है। पानी पीने को, अन्न खाने को, ज़मीन चलने फिरने को और बहुत-सी लाभदायक चीज़ें हमें ईश्वर ने ही दी हैं। हमारा यह शरीर भी, जिसको देख देख कर हम फूले नहीं समाते, ईश्वर का ही दान है। ये आँखें जिनसे हम देखते हैं, ये कान जिनसे हम सुनते हैं, यह नाक जिससे हम सूँघते हैं, ये हाथ जिनसे हम लिखते हैं, और यह ज़बान जिससे हम पढ़ते हैं सिवा ईश्वर के और कौन बना सकता था।

आहा! देखो ईश्वर कितना बड़ा है। इसने कैसी कैसी विचित्र चीज़ें बनाई हैं! सूर्य्य जो ज़मीन से कई करोड़ गुना बड़ा है इसी ईश्वर ने बनाया है। अगर ईश्वर सूर्य्य को न बनाता तो हम मारे जाड़े के मर जाते। ज़मीन पर अँधेरा ही अँधेरा होता और वृक्ष आदि कुछ भी न उग सकते। रात को आकाश में जो सुन्दर सुन्दर दीपक से दृष्टि पड़ते हैं और जिनको हम तारे कहते हैं वे भी ईश्वर ने ही बनाये हैं। बड़े बड़े समुद्र, जिनमें जहाज़ पर बैठ कर हम यात्रा करते हैं ईश्वर ने ही बनाये हैं। मेंह जिससे हमारी खेती-बारी होती है ईश्वर ही बरसाता है।

आहा ! देखो ईश्वर ने हमारे ऊपर कैसा उपकार किया है। हमारे उत्पन्न होने से पहले ही ईश्वर ने हमारी माता की छाती में दूध उत्पन्न कर दिया, जिससे हम भूखे न मरें। ज्यों ज्यों हम बड़े होते गये हमको सब ज़रूरी ज़रूरी चीज़ें वही देता गया। उसी ने हमारी रक्षा की। उसी ने हमको जीवन दिया। इसलिए हमको भी चाहिए कि जैसे ईश्वर हमको प्यार करता है ऐसे ही हम भी उसको प्यार करें। परन्तु हम उसको प्यार कैसे कर सकते हैं। उसके पास तो इतनी चीज़ें हैं जो वह हमको दे सकता है, परन्तु हमारे पास उसके देने के लिए कोई भी चीज़ नहीं। ईश्वर हमसे कुछ माँगता भी नहीं। हम उसे क्या दे सकते हैं। हमारे प्यार करने की यह विधि है कि हम उसको धन्यवाद दें। जो मनुष्य हमको एक पैसा भी दे तो भी हम उसको धन्यवाद देते हैं, तो जिस ईश्वर ने हमें इतनी चीज़ें दी हैं उसका धन्यवाद हमको न करना चाहिए। देखो कुत्ता भी टुकड़ा डालने से अपने मालिक की ओर पूँछ हिलाता है। फिर हम तो मनुष्य हैं। हमें तो ईश्वर का अवश्य ही धन्यवाद करना चाहिए।

दूसरी बात यह है कि हमको ईश्वर की आज्ञा का पालन करना उचित है। ईश्वर अच्छे अच्छे कामों को चाहता और बुरे कामों से घृणा करता है। इसलिए हम अच्छे अच्छे काम करें और बुरे कामों के पास भी न फटकें; नहीं तो ईश्वर हमको दण्ड देगा। जैसे हमारे पिता हमको झूठ बोलने, विद्या न पढ़ने, चोरी करने आदि बुरे कामों पर सज़ा देते हैं इसी प्रकार हम सबका पिता ईश्वर सत्य बोलने, विद्या पढ़ने आदि श्रेष्ठ कामों से प्रसन्न होकर हमको सुख देता है और दूषित कर्म करनेवालों पर अप्रसन्न होकर उनको दुःख देता है।

ईश्वर सब जगह है और सबके हृदय की बात को जानता

है। इसलिए हमको उसका हमेशा भय रखना चाहिए और मन में कभी भी बुरे कामों को न विचारना चाहिए।

सरकारी कोतवाल तो हमको बुरा काम करते हुए ही पकड़ेगा परन्तु ईश्वर तो मन में बुरा विचार करनेवाले को भी पकड़ लेगा। ईश्वर के न्याय से हम कभी नहीं बच सकते। इसलिए उससे सदा डरना चाहिए।

देखो ईश्वर हमारा पिता है तो हम सब आपस में भाई हुए। इसलिए भाई भाई को प्रेम के साथ रहना चाहिए और किसी को कष्ट नहीं देना चाहिए। जिस प्रकार अगर एक लड़का अपने भाइयों को कष्ट देता है तो उसका पिता उससे क्रुद्ध होता है, क्योंकि पिता का प्रेम तो सब पर तुल्य ही है; इसी प्रकार परमात्मा का प्रेम हम सब पर तुल्य है। यदि हममें से कोई एक दूसरे को सतावेगा तो ईश्वर हम पर कोप करेगा।

सबसे पवित्र और अच्छी चीज़ दुनिया में ईश्वर ही है; इसलिए जो मनुष्य ईश्वर से हित करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं वे भी पवित्र और अच्छे हो जाते हैं; परन्तु ईश्वर से जो मूर्ख विमुख रहते हैं वे जन्म-जन्मान्तर लों अपवित्र और दुःखी रहकर अधोगति को प्राप्त होते हैं। इसलिए हमको चाहिए कि अवश्य ईश्वर की उपासना किया करें। क्योंकि हमारे सब कामों के फल का देनेहारा ईश्वर ही है। ईश्वर से ही हर काम की पूर्ति की प्रार्थना करनी चाहिए। वही हमको इम्तिहान में पास करावेगा, वही हमको सुख देगा। जब हम किसी कार्य को करने बैठें तब ईश्वर की प्रार्थना कर लें। इससे दो लाभ होंगे। एक तो यह कि हम कोई कुचेष्टा न करेंगे। दूसरे हमारा उत्साह अच्छे काम के करने में होगा। इसी से हमारा काम सफल होगा।

५—पवित्रता

पवित्रता शुद्धि का दूसरा नाम है। यह दो प्रकार की होती है, एक भीतरी दूसरी बाहरी। बाहरी शुद्धि शरीर से सम्बन्ध रखती है। शरीर को शुद्ध रखना और उसको मैला न होने देना शारीरिक शुद्धि कहलाती है। तुमने सवेरे उठ कर देखा होगा कि रात के वक्त सोने से हमारे शरीर में मैल जम जाता है। आँखों में कीचड़ और नाक, कान तथा मुख में कुछ दुर्गन्धि सी प्रतीत होती है। यही अपवित्रता है। इससे हमारे चित्त को कष्ट पहुँचता है, इसलिए हम स्नान आदि से शरीर को शुद्ध कर लेते हैं। उसी समय चित्त में शान्ति आ जाती है। इसी को पवित्रता कहते हैं। जो लोग बहुत दिनों तक नहीं नहाते वे शीघ्र बीमार पड़ जाते हैं, क्योंकि उनके रोंगटों में मैल जम जाता है और शुद्ध वायु भीतर से बाहर और बाहर से भीतर नहीं आ जा सकता। इसलिए हमको मालूम हो गया कि शरीर की शुद्धि से चित्त को शान्ति रहती है। और स्वास्थ्य ठीक रहता है।

शारीरिक शुद्धि के लिए केवल नहाना ही जरूरी नहीं है, किन्तु अपने वस्त्र आदि भी पवित्र रखने चाहिए। देखो अगर कोई मैले कुचैले कपड़े पहने तुम्हारे समीप आवे तो तुम उससे घृणा करोगे। इसी तरह अगर तुम अपने कपड़ों को मैला रक्खोगे तो दूसरे तुमको अपने पास न बैठने देंगे और तुम्हारे शरीर से दुर्गन्धि आवेगी। चाहे तुम्हारा कपड़ा मोटा और कम मूल्य का ही हो परन्तु शुद्ध होना चाहिए। बहुत-से मूर्ख लोग अपने बच्चों को गहना तो पहना देते हैं परन्तु वस्त्र मैले ही रखते हैं; इससे उनके बच्चे सदा बीमार रहते हैं। इसलिए वस्त्रों को पवित्र रखना चाहिए।

जिन अन्य वस्तुओं से हमको रोज़ काम पड़ता है वे भी शुद्ध रहनी चाहिए । हमारा मकान जिसमें हम रहते हैं रोज़ शुद्ध होना चाहिए । ऐसा न हो कि कहीं कूड़ा-करकट पड़ा रहे । उसमें वायु के आने जाने का मार्ग हो जिससे हमको शुद्ध वायु मिल सके । क्योंकि अशुद्ध वायु से रोग उत्पन्न हो जाते हैं । पहले लोग वायु की शुद्धि के लिए हवन यज्ञ किया करते थे, परन्तु आज कल लोगों ने यह शुभ कर्म त्याग दिया है तभी तो नित्य हैज़ा और ताऊन हमारे शहरों में फैलते रहते हैं । जिस जल को हम पीते हैं, वह शुद्ध होना चाहिए और भोजन आदि भी बड़ी पवित्रता से खाना चाहिए । जिस जगह भोजन बने वह शुद्ध हो और जो बनावे वह भी शुद्ध होकर बनावे ।

यह तो हुई बाहरी पवित्रता । परन्तु भीतरी पवित्रता इससे भी ज़रूरी चीज़ है । केवल शरीर को पवित्र करने से ही काम नहीं चलता, हमारी वाणी और हमारा मन भी शुद्ध होना चाहिए । वाणी की शुद्धि के लिए ज़रूरी है कि हम सत्य बोलें और किसी को गाली न दें, क्योंकि गाली देने से वाणी गन्दी हो जाती है । मन को अच्छे विचारों से शुद्ध करना चाहिए । जो मनुष्य रोज़ नहाता है, शुद्ध वस्त्र पहनता है; पर जिसके ख़यालात बुरे हैं, जो दूसरों से वैर रखता है; लोगों को हानि पहुँचाता है और जिसका मन अन्य कुचेष्टाओं में लगा रहता है वह उस सोने के घड़े के समान है जिसमें विष भरा हुआ है । तुमको उचित है कि कभी अपने हृदय को बुरे विचारों से दूषित न करो । तुम्हारे हृदय में परमात्मा का वास है । कवि कहता है कि

"जाके हिर्दय साँच है ताके हिर्दय आप ।"

अगर तुम अपने इस हृदयरूपी मकान को अपवित्र करोगे तो ईश्वर तुमसे अप्रसन्न होगा और लोग भी तुमसे घृणा करेंगे।

६—आशा

यह कहावत बड़ी मशहूर है कि 'दुनिया ब-उम्मेद क़ायम'— अर्थात् संसार की स्थिति आशा से है। यदि मनुष्य निराश हो जाय तो एक मिनट भी जीना दुर्लभ हो जाय। संसार के जितने काम चल रहे हैं वे सब आशा के ही सहारे से।

देखो एक लड़का सबेरे उठकर पाठशाला जाता है, तमाम दिन बड़ी मेहनत करता है और रात को दीपक के सहारे किताबें पढ़ता है। गर्मी पड़ रही है, नींद आ रही है, कीड़े सताते हैं, परन्तु वह पढ़ता ही चला जाता है। भला कोई पूछे कि वह इतनी कड़ी मेहनत क्यों कर रहा है, तो इसका यही उत्तर मिलेगा कि उसे इम्तिहान में पास होने की आशा है। यदि उसे यह आशा टूट जाय तो वह एक पल भी किताब नहीं पढ़ सकता।

देखो माता-पिता अपने पुत्र को किस तरह पाल रहे हैं और उसके लिए कितना कष्ट उठाते हैं। बेचारी माँ रात दिन बच्चे को लिये लिये फिरती है। अगर वह बीमार हो जाता है तो खड़ी खड़ी रात भर जगती है। पिता बड़े कष्ट से रुपया कमा कर लाता और बच्चों को खिलाता पिलाता है। जब वे बड़े होते हैं तो मदर्से भेजता है। मोटा मोटा आप खाता है और अच्छा अच्छा बच्चों को खिलाता है। भला वह यह कष्ट क्यों उठा रहा है? इसका साफ़ जवाब यह है कि उसे आशा है कि ये बच्चे बड़े होकर उसको सुख देंगे।

देखो एक इंजीनियर ने बड़ी भारी रेल की सड़क का ठेका लिया है। उस बेचारे को कई कोस तक सड़क बनानी है, नदियों पर पुल बनाने हैं; ऊँची, नीची ज़मीन को साफ़ करना है। और भी ऐसी बीसियों मुश्किलें हैं; परन्तु वह अपने काम में लग रहा है। रोज़ थोड़ा थोड़ा करता जाता है। आज एक गज़ बनी, कल दो गज़। लोग पूछते हैं कि तुम इतना परिश्रम क्यों कर रहे हो। वह कहता है कि मुझे आशा है कि एक न एक दिन मेरा काम समाप्त हो जायगा। अगर उसकी यह आशा टूट जाय तो आज वह काम छोड़ दे।

एक पथरकट को पहाड़ काट कर नहर निकालनी है। बेचारा अपनी किरनी बसूली लिये पत्थर काट रहा है। कोसों लम्बा इतना बड़ा पहाड़ सामने है और वह बेचारा छोटा-सा आदमी! थोड़ा थोड़ा रोज़ काटता है। एक दिन हुआ, दो दिन हुए, तीन हुए, चार हुए। ओहो! अभी तो कुछ भी नहीं कटा। लोग चकित हैं कि क्या यह काट लेगा, पर उसे तो आशा लग रही है कि एक न एक दिन अवश्य पहाड़ कटेगा और नहर निकलेगी। यह आशा ही है जो उसको काम में लगा रही है।

वास्तव में आशा बड़ी चीज़ है। इसके सहारे हम कठिन से कठिन कामों को सुगमता से कर सकते हैं। चाहे एक बार हमको सफलता प्राप्त न भी हो तो भी यदि आशा बनी रहे तो उसके आश्रय से हम क्या कुछ नहीं कर सकते? परन्तु यदि आशा न हो तो एक पग उठाना भी मुश्किल हो जाता है। निराश होकर ही लोग विष खा लेते हैं और निराश होकर ही प्राण-घात किया जाता है। आशा से जीवन में सुख और निराशा से दुःख होता है। आशा से हमारा सम्बन्ध भविष्य काल के साथ जुड़ जाता है और निराशा से टूट जाता है।

जब हमको मालूम हो गया कि आशा हमारे जीवन के लिए ऐसी लाभदायक है तो ऐसा यत्न करना चाहिए कि आशा बँधी रहे। पर आशा रखने के लिए ज़रूरी है कि हम ऐसे कार्य करें जो हमारी शक्ति में हों। जो लोग अपनी शक्ति से बाहर काम उठा लेते हैं उनको सफलता नहीं होती और जब कई बार असफलता होती है तो आशा टूट जाती है और क्लेश ही क्लेश शेष रह जाता है। अगर हमारे सब काम पूरे होते चले जायँ तो नित्य प्रति आशा बढ़ती जाती है। जो कप्तान पहली लड़ाई हार जाता है उसका दिल टूट जाता है और जो लड़का पहले ही इम्तिहान में फेल हो जाता है उसका आगे को उन्नति करना दुर्लभ है। इसलिए आशा बाँधने के लिए सबसे पहली बात यह है कि हम बित्त से बाहर कोई काम न कर बैठें।

आशा को क़ायम रखने के लिए ईश्वर-विश्वास की भी आवश्यकता है। जिसके ऊपर सहायता के लिए कोई बलवान् मनुष्य हो उसका दिल बढ़ा रहता है। इसी प्रकार जिस मनुष्य का ईश्वर पर विश्वास है वह समझता है कि मेरी सहायता के लिए एक बड़ी शक्ति उपस्थित है और इस तरह उसकी आशा बँधी रहती है।

कभी ऐसी चीज़ की आशा न करनी चाहिए जो असम्भव हो क्योंकि ऐसा करने से शीघ्र अपने किये पर पछताना पड़ेगा। ऐसी आशा भी न करो जिसके होने में तुम्हें निश्चय न हो। बहुत-से मनुष्य अनिश्चित आय की आशा करके अपना व्यय बढ़ा लेते हैं पर जब उनकी वह आशा पूरी नहीं होती तो सिर पीट कर रोते हैं। ऐसा कभी न करना चाहिए। बादल को देखकर घड़े फोड़ना मूर्खता है।

———

७—सत्सङ्ग

यह बात सब जानते हैं कि मनुष्य की ऐसी प्रकृति है कि वह दूसरों का सङ्ग ढूँढ़ता है। दुनिया में प्रायः कोई मनुष्य ऐसा न होगा जो अकेला रहना चाहे। अन्य जीव-जन्तु तो ऐसे हैं जो अकेले रह कर अपनी गुज़र कर सकते हैं पर मनुष्य ऐसा विचित्र जीव है कि उसके लिए बहुत-से हाथों की सहायता चाहिए। एक अन्न को ले लो। क्या एक मनुष्य अपने लिए अन्न उत्पन्न कर सकता है? जो रोटी हम खाते हैं उसके बनाने में वस्तुतः सैकड़ों मनुष्यों के हाथ लगे होंगे। यदि आप भले प्रकार ऐसा विचार करें तो ज्ञात होगा कि पहले किसान ने खेत को जोता—जोतने में हल की ज़रूरत पड़ी। यह हल लकडी और लोहे का बना हुआ है, जिसमें कई बढ़इयों और लुहारों को काम करना पड़ा था। जब खेत जुत गया तो बीज लाने, खेत में डालने, पानी देने, रक्षा करने आदि में देखो कितने मनुष्यों की ज़रूरत पड़ी। फिर काटना, भूसा अलग करना, बाज़ार को ले जाना, बेचना इत्यादि कई ऐसे काम हैं जिनके पश्चात् हम तक अन्न आता है। इस अन्न के लिए चक्की बनाने, इसे पीसने, चालने, रोटी पकाने आदि में देखो कितने मनुष्यों ने काम किया। अगर ये मनुष्य न होते तो आज वह रोटी, जिसको हम अपनी कमाई कहते हैं, हमको नसीब न होती। एक रोटी से ही क्या है? कपड़ा, मकान और अन्य चीज़ें केवल सङ्ग से ही हमको प्राप्त होती हैं। यही कारण है कि हम कभी अकेले नहीं रह सकते। हमको सङ्ग के लिए कोई न कोई अवश्य चाहिए।

जब यह मालूम हो गया कि हमको सङ्ग की आवश्यकता है तब यह देखना चाहिए कि जिनका हम सङ्ग करना चाहते हैं, वे

मनुष्य कैसे होवें। जो मनुष्य बुरे लोगों के साथ रहता है उसके संस्कार भी उन लोगों के से हो जाते हैं और जो अच्छे आदमियों में रहता है उसके संस्कार अच्छे रहते हैं। इसलिए हमको उचित है कि सत्संग करें अर्थात् सज्जनों के साथ रहें।

तुम जानते हो कि सङ्गत का प्रत्येक पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। किसी चीज़ को लेकर नमक की झील में डाल दो। थोड़े दिनों में निकाल कर देखो तो वह नमक ही हो जायगी। यही हाल आदमी का है। चाहे वह कैसा ही अच्छा क्यों न हो, जब बुरे आदमियों में रहने लगता है तब उसकी बुद्धि भ्रष्ट होने लगती है और कुछ दिन पीछे औरों की तरह वह भी दुष्ट हो जाता है। लोकोक्ति है कि घोड़ों को गधों के अस्तबल में बाँध दो, कुछ नहीं तो दुलत्ती मारना ज़रूर ही सीख जायँगे। जब हम किसी बुरी सङ्गत में पड़ जाते हैं तब पहले हम दुष्ट पुरुषों से रीति-व्यवहार करने लग जाते हैं। फिर धीरे धीरे उनके दुष्ट गुण और दुष्ट कामों से एक प्रकार की प्रीति-सी हो जाती है। फिर स्वयं उनको करने लग जाते हैं। इसलिए जहाँ तक हो सके हमको दुष्ट सङ्गत से बचना चाहिए।

यह कहावत बहुत ठीक है कि किसी मनुष्य के गुण उसकी सङ्गत से जाने जाते हैं, अर्थात् यदि यह बुरी सङ्गत में रहता है तो उसे लोग बुरा ही समझेंगे, चाहे वह अच्छा ही क्यों न हो? इसी तरह यदि एक दुष्ट मनुष्य भी अच्छे मनुष्यों के मध्य में रहता हो तो लोग उसे अच्छा ही समझते हैं। यह बात प्रसिद्ध है कि 'कोयलों की दलाली में हाथ काले'। अगर कोई चाहे कि मैं बुरी सङ्गत में रहता हुआ भी अच्छा बना रहूँ तो यह बात ऐसे ही असम्भव है जैसे हवा। चलने पर उससे किसी पत्ते का न हिलना।

खर्बूज़े को देख कर खर्बूज़ा रंग बदलता है। इसी तरह एक मनुष्य को देख कर दूसरा मनुष्य कार्य्य करता है। यदि तुम्हारे पास ऐसे लोग रहते हैं जो नित्य प्रति पठन-पाठन में लगे रहें तो कभी न कभी तुम भी उधर को ध्यान देने लग जाओगे। परन्तु यदि वे लोग मद्य पीते, जुआ खेलते और अन्य दुष्ट कर्म करते हैं तो एक न एक दिन तुम भी उन्हीं में मिल जाओगे। इसलिए अगर बुरे कामों से बचना चाहते हो तो बुरी सङ्गत से बचो।

बुरी सङ्गत से केवल बुरे गुण ही हममें नहीं आ जाते किन्तु बहुधा हम निर्दोष होने पर भी विपत्तियों में फँस जाते हैं। कल्पना करो कि तुम चोरों में रहते हो। एक बार चोरी हो गई; सब चोर पकड़े गये। अब सम्भव है कि उनके झपट्टे में तुम भी आ जाओ क्योंकि तुम उनके साथ रहते हो और लोग तुमको ऐसा ही जानते हैं। इसलिए इन विपत्तियों से बचने के लिए दुष्ट-सङ्गत को छोड़ दो।

देखो, गुलाब के तले की मिट्टी भी सुगन्धित हो जाती है। इसी प्रकार महात्माओं के मध्य में रहनेवाले दुष्ट भी महात्मा होकर कुटिलता को त्याग देते हैं। जो सत्सङ्ग में रहता है उसका बड़ा मान होता है। पर जो बुरी सङ्गत में फँस जाता है वह बड़ा क्लेश उठाता है।

सत्सङ्ग की आदत बचपन से ही डालना चाहिए। बहुत से लोग अपने बच्चों का बचपन में ध्यान नहीं रखते, इसलिए उनके लड़के दुष्ट लड़कों के साथ खेलते, आपस में गालियाँ देते और अन्य कुचेष्टायें करते हैं। यह बचपन की पड़ी हुई आदत उनको आयुपर्यन्त दुःखदायी होती है और बड़ा परिश्रम करने से भी नहीं छूटती। जन्मते समय बच्चे का मन शुद्ध और

पवित्र होता है। उस समय उसको जैसी आदत डाली जाय वह वैसा ही हो जाता है। परन्तु ज्यों ज्यों वह बढ़ता है उसके मन में पुरानी आदतें घर कर लेती हैं और फिर किसी आदत का छुड़ाना दुर्लभ है। इसलिए माता-पिता को चाहिए कि शुरू से ही इसकी ओर ध्यान दें और अपने बच्चों को कभी बुरे आदमियों अथवा बच्चों में न बैठने दें। बल, बुद्धि तथा विद्या केवल सत्सङ्ग से ही प्राप्त होती है।

अगर कभी तुम बुरी सङ्गत में पड़ जाओ तो जितनी जल्दी हो सके उसके छोड़ने का प्रयत्न करो और यदि छोड़ न सको तो अपना चलन इस प्रकार का कर लो कि बुरे आदमियों के दुष्ट गुणों का तुम पर प्रभाव न पड़ सके। सदा नेक काम करते रहो और दुष्ट आदमियों को धीरे धीरे समझाते रहो। इस तरह पहले तो तुमको कठिनाई होगी। परन्तु थोड़े ही दिनों में तुम्हारी दुष्ट सङ्गत ही सत्सङ्ग हो जायगी।

८—प्रेम

प्रेम अर्थात् स्नेह संसार की शक्तियों में सबसे प्रबल है। जो काम किसी शक्ति से नहीं हो सकते उनको प्रेम से कर सकते हैं। कहा जाता है कि प्रेम से लोहा भी मोम हो जाता है। सब संसार केवल प्रेम की ही डोरी में बँधा पड़ा है। देखो, घर क्या है? कुछ ऐसे मनुष्यों का समूह है जो एक दूसरे से प्रेम रखते हैं। इसी प्रकार जाति तथा देश को समझना चाहिए। जिस प्रकार गोंद से पुस्तक के सब पृष्ठ जुड़े रहते हैं उसी तरह प्रेम मनुष्य-जाति के लिए गोंद का काम करता है। यदि प्रेम न हो तो मनुष्य एक दूसरे से लड़ कर मर जायँ!

संसार के सब काम प्रेम ही से चलते हैं। माता रोते हुए बच्चे को केवल प्रेम के वश हो दूध पिलाती है। भाई, बहन, पति, स्त्री, माता, पिता यह सब प्रेम का ही प्रकाश है। यही प्रेम कहीं माता का रूप रख कर अपने पुत्र की याद में तड़प रहा है; यही प्रेम देशभक्त का रूप धारण कर देश के लिए कष्ट उठा रहा है। यही प्रेम था जिसने राजा दशरथ को मारा। यही प्रेम था जिसके वश हो लक्ष्मण और सीता राम के साथ वन को चल दिये। यही प्रेम योगियों को ईश्वर-भक्ति में लगाता है और यही प्रेम धर्म्म के सेवकों को कष्ट सहन कराता है। जिधर देखो उधर यही प्रेम अनेक रूप धारण किये हुए प्रकट हो रहा है।

ऊपर कहा जा चुका है कि जो काम किसी से न हो सके उसको हम प्रेम से कर सकते हैं। प्रेम से अधिक दुनिया में कोई बल नहीं है। प्रेम वह रस्सी है जिसको न तो आग जला सकती है, न पानी गला सकता है और न लोहा काट सकता है। जो बड़े बड़े योद्धा तीक्ष्ण से तीक्ष्ण शस्त्र से भी वश में नहीं हो सकते वे केवल इस सूक्ष्म प्रेम से ऐसे बँध जाते हैं कि पीछा नहीं छुड़ा सकते। देखो, एक सेनापति को, जिसको सदा मार-धाड़ से ही काम पड़ता है, वह बड़ा वीर होता है और किसी की एक बात भी नहीं सह सकता। यदि बड़े से बड़ा आदमी भी उसे गाली दे तो वह क्रुद्ध होकर झट उसका सिर काट दे। परन्तु यही शस्त्रधारी मनुष्य अपने बच्चे को गोद में लिये हुए है जो तुतला तुतला कर उसे गालियाँ दे रहा है, परन्तु यह वीर प्रेम की डोरी में ऐसा बँधा है कि उसका शस्त्र इस बच्चे पर नहीं उठ सकता। देखो राजा अपने सारे राज्य में अकेला होता है। यदि प्रजा चाहे तो उसे झट मार डाले। पर यह उसका प्रेम ही है जो इतने बड़े राज्य पर शासन करने को उसे समर्थ बनाता है।

प्रेम सुख का मूल है। जिस घर के लोग एक दूसरे के साथ प्रेमपूर्वक रहते हैं उनको दरिद्र और निर्धन होते हुए भी कभी दुःख नहीं होता। परन्तु जिस घर में प्रेम नहीं वह धनवान् होकर भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। जिन दो मनुष्यों में प्रेम होता है वे एक दूसरे के हित के लिए परिश्रम करते हैं और इस प्रकार दोनों का हित साथ साथ होता जाता है। परन्तु दो आपस में फूट रखनेवाले मनुष्य जल्दी नष्ट हो जाते हैं। देखो, कौरवों और पाण्डवों के नाश का कारण केवल फूट ही थी। पृथ्वीराज और जयचन्द की फूट ने ही भारतवर्ष की यह दुर्गति बनाई। जिस जिस देश ने जब जब उन्नति की है वह प्रेम ही का कारण है। देखो आज कल इँगलिस्तान आपस के प्रेम ही के कारण संसार भर पर राज्य कर रहा है। इसलिए जो मनुष्य भला चाहते हैं उनको एक दूसरे से प्रेम रखना चाहिए।

प्रेम के लिए सबसे बड़ी बात यह है कि हम दूसरों का उपकार करना सीखें। क्योंकि जो मनुष्य अपना ही प्रयोजन सिद्ध करते हैं वे सच्चे प्रेम के भागी नहीं हो सकते। सच्चा प्रेम केवल भले और धर्मात्मा मनुष्यों में ही होता है। जो लोग दुष्ट हैं वे दिखलाने को तो एक दूसरे से प्रेम करते हैं पर जब उनके प्रयोजन की सिद्धि हो जाती है तब झट दूर हो जाते हैं। इसको प्रेम नहीं कहते किन्तु यह तो धोखा है। ऐसे धोखेबाजों से सदा बचना चाहिए। प्रेम की जड़ निष्प्रयोजनता और परोपकार ही है।

—

६—उद्यम

किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए जो प्रयत्न किया जाता है उसी का नाम उद्यम है। दुनिया में अन्य जीवों के लिए ईश्वर ने सब वस्तुएँ दे रक्खी हैं। मोटी खाल उन्हें वस्त्रों का काम देती है। चारा उनके खाने के लिए है, जङ्गल ही उनका घर है। परन्तु मनुष्यों की दशा विचित्र है। उसे हर चीज़ की प्राप्ति के लिए उद्यम करना पड़ता है। जब तक वह मकान न बनावे, कहाँ रहे। जब तक खेती न करे, क्या खावे और जब कपड़ा न बुने तो क्या पहने। इसे तो निश दिन उद्यम ही उद्यम करना है।

जब हम बिना उद्यम के किसी वस्तु को प्राप्त नहीं कर सकते तब हमको चाहिए कि नित्य उद्यम करते रहें और एक मिनट भी ख़ाली न बैठें। उद्यम करने से हमारे जीवन में सफलता होगी और उद्यम ही हमको दुःख से बचावेगा। जो मनुष्य नित्य कुछ न कुछ करते रहते हैं वे सदा ख़ुश रहते हैं परन्तु जो सुस्त हैं, और हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं उनको दिन काटना भारी हो जाता है। जिन लोगों के पास काम बहुत है उनको सबेरा, दोपहर, शाम योंही बीत जाती है और मालूम भी नहीं पड़ती। वे तमाम दिन काम करके रात को सुख की नींद सोते हैं। पर जो लोग काम नहीं करते उनकी बुरी गति होती है।

दृष्टान्त के लिए हमारे यहाँ के रईसों को ले लो। इन लोगों के पास धन बहुत है। ये बिना काम किये भी चुपड़ी रोटी खा सकते हैं, इसलिए इन्होंने ठान लिया है कि हाथ पर हाथ धरे बैठे रहें और फरी तक न फोड़ें। इसका परिणाम यह है कि ये

बेचारे ८ बजे तक तो पड़े सोते रहते हैं। उठे, इधर-उधर डोले, गपशप की, अच्छे से अच्छा खाना निगला और फिर चारपाई के सिर; दिन ढला, यार-दोस्त आगये और लगी फिर गपशप उड़ने। शिकायत है तो यह कि दिन बड़ा होता है, काटे नहीं कटता। लाओ ताश ही खेलो, शतरञ्ज में ही जी बहलाओ, ज्यों त्यों करके शाम हुई। हुज़ूर का पैर तो धरती पर लगता नहीं, गद्दी से उतरे बग्घी पर और बग्घी से उतरे तो गद्दी पर। रात हुई, खाना खाया, फिर सो गये; न इन्हें यह ख़बर है कि किसी के घर में खाने को है या नहीं; न ये यह जानते हैं कि संसार में क्या हो रहा है। सोना न हुआ शैतान की आँत, भला नींद कहाँ से आवे, घड़ी दो घड़ी हो तो हो, रात-दिन सोना ही सोना! चारपाई पर पड़े पड़े स्वप्न देखते हैं। फिर यह शिकायत है कि खाना हज़म नहीं होता। काम करते नहीं, खाये ही जाते हैं उस पर पाचक चूर्ण और दवाओं की भरती। एक दिन हो तो हो, दवायें बेचारी क्या करें। अन्त में वे भी थक जाती हैं। नित रोगी रहते हैं और दुःख उठाते हैं। इसका कारण क्या है? उद्यम का न करना।

इसके विरुद्ध उन लोगों की हालत देखो जो सबेरे से उठ कर काम करते हैं। इनको फ़िक्र है कि यदि काम न करेंगे तो खाना कहाँ से मिलेगा। बहुत तड़के उठे—नित्य-कर्म किया और लगे उद्यम करने। दोपहर के बारह बजे ख़ूब भूख लग रही है। खाना खाया तो बड़ा स्वादिष्ठ। क्योंकि भूख में तो किवाड़ भी पापड़ होते हैं। फिर लगे काम करने; जो कुछ खाया था हज़म हो गया, खाना हज़म होने से ख़ून बना और शरीर की पुष्टि हुई। दिन भर काम करते करते थक गये, इसलिए चारपाई पर पड़ते ही सो गये। एक ही करवट में सबेरा हो गया। ओहो! कैसा सुख का जीवन है। न दवाओं की ज़रूरत, न रोग की

शिकायत, दण्ड पेलते हैं और मौज करते हैं। वस्तुतः काम में ही आनन्द है।

काम लोगों को केवल सुखी ही नहीं रखता किन्तु बुरे भावों से भी बचाता है। तुम जानते हो, मनुष्य नित्य-प्रति अच्छा या बुरा कुछ न कुछ काम करता ही रहता है। चाहे शरीर से, चाहे वाणी से और चाहे मन से। जिन लोगों को हम ठलुआ कहकर पुकारते हैं वे वास्तव में मन से ही कुछ न कुछ विचारते हैं। किसी ने सच कहा है कि सबसे कठिन या यों कहा कि असंभव काम 'किसी काम का न करना' है। जब हमको यह ज्ञात हो गया कि हम बिना किसी न किसी काम के एक पल भी नहीं बिता सकते तो हमारी दो ही दशायें होंगी, या तो हम बुरा काम करेंगे या भला। जो लोग भला काम नहीं करते वे बुरा अवश्य करते हैं। यही कारण है कि ठाली आदमी बुरी बुरी बातों को सोचता रहता है। ताश, गंजीफ़े की उसी को सूझती है, जिसके पास करने को कोई अच्छा काम नहीं। अँगरेज़ लोग सच कहा करते हैं कि अगर तुम्हारे पास करने को कोई भला काम नहीं तो शैतान तुमको काम दे देगा, अर्थात् तुम बुरी बातें करने लग जाओगे। इसलिए सबसे अच्छी रीति बुराई से बचने की यह है कि हम नित्य कुछ न कुछ उद्यम करते रहें।

कहा जाता है कि बिना चलाई हुई, लोहे की चाबी को काई खा जाती है, परन्तु चलती हुई चाबी साफ़ और चमकीली रहती है। बस यही हाल शरीर का है। अगर इससे काम न लो तो यह दुर्बल हो जायगा। तुमने देखा होगा कि बहुत-से फ़क़ीर अपना हाथ नित्य ऊपर को किये रहते हैं, इससे थोड़े दिनों में लोहू का बहना बन्द होकर वह हाथ सूख जाता है। इसी तरह जिस अंग से तुम काम करना छोड़ दोगे वही

निर्बल हो जायगा। आँख से कई मास तक न देखो, फिर आँख से कोइ वस्तु दिखाई न पड़ेगी। ज़बान से बहुत दिनों तक न बोलो, ज़बान में बोलने की शक्ति भी नहीं रहेगी। ईश्वर ने हमको शरीर इसलिए नहीं दिया कि उसे कोतल घोड़े की तरह चारपाई पर ही डाले रक्खें। ईश्वर कहता है कि अगर तुम शरीर से पूरी पूरी मिहनत न लोगे तो मैं उसे छीन लूँगा। जो लोग मिहनत नहीं करते उनके गले रोग पड़ जाते हैं और वे बूढ़े होने से पहले ही मर जाते हैं। देखो अँगरेज़ लोगों और हमारे भारतवर्ष के रईसों में कितना भेद है। एक अँगरेज़ चाहे कितना ही धनवान् क्यों न हो, हमेशा उद्यम करता रहता है। कभी घोड़े पर चढ़ता है, कभी जंगलों में फिरता है, कभी किर-किट खेलता है, कभी यह करता है, कभी वह करता है। निठल्ला कभी नहीं बैठता। इसी लिए वह फ़ुरतीला और नीरोग रहता है। अगर हम तन्दुरुस्ती चाहते हैं तो अवश्य उद्यम करते रहें।

देखो समय काम से ही जाना जाता है। जिस दिन तुम कुछ काम नहीं करते वह तुम्हारे लिए न होने के समान है। जो मनुष्य संसार में आकर बहुत-सा काम कर गये हैं उनके जीवन हमको बहुत बड़े मालूम होते हैं, पर जो लोग कुछ नहीं कर गये उनके जीवन पर दृष्टि डालने से हमको कुछ पता नहीं चलता। इसलिए अगर हम अपने जीवन को बड़ा बनाना चाहते हैं तो हमको उद्यम करना चाहिए। जितने बड़े बड़े पुरुष दुनिया में हो गये हैं वे बड़े उद्यमी थे। काहिलों ने संसार में कुछ नहीं किया, जो कुछ किया है वह उद्यमी पुरुषों ने।

१०—माता-पिता की सेवा

देखो जब तुम्हारा जन्म हुआ था, तब तुम्हें कुछ भी सुध-बुध न थी। न तुम अपनी रक्षा कर सकते थे और न खान पान तथा वस्त्र आदि अपने लिए एकत्र कर सकते थे। जब तुम्हें भूख लगती तो रो पड़ते, जब प्यास लगती तो चिल्ला उठते। ऐसे कठिन समय में जब तुममें चलने फिरने तक की शक्ति न थी तब परमात्मा ने तुम्हारी रक्षा के लिए तुम्हारे माता-पिता को नियत किया। उन्होंने हर तरह की मुश्किल सह कर तुम्हारा पोषण किया।

देखो, तुम्हें उस दिन का स्मरण नहीं जब तुम ह्वाउ ह्वाउ करते थे और शुद्ध शब्द तक मुख से नहीं निकलता था। तब तुम बैठ भी न सकते थे। और तो और तुमसे अपने मुख की मक्खी तक न उड़ती थी। ऐसी दशा में सिवा माता के संसार में तुम्हारा कौन था? उसी माता ने तुमको अपनी गोद में लिया; अपनी छाती से दूध पिलाया। नरम नरम गद्दों पर सुलाया; आप खरारे में सोती पर तुमको बिस्तर पर ही सुलाती। गर्मी में रात भर पंखा झलती, लोरियाँ देती, मुख चूमती और तुमको ख़ुश रखती थी।

देखो, जब तुम बीमार पड़ते तब तुम्हारे माता-पिता को जो कष्ट होता उसका बयान लेखनी की शक्ति से बाहर है। मारे चिन्ता के न खाते हैं न पीते हैं। यही धुन है कि तुम अच्छे हो जाव। इस हकीम के घर जा उस डाक्टर के घर जा, किसी के हाथ जोड़, किसी के पैर पकड़ जैसे हो सके दवा लाते और तुम्हें पिलाते। रात को जो तुम्हारी आँख लग गई तो उनको भी चैन पड़ गई; नहीं तो सवेरा हो-गया और पलक से पलक न

लगी। तुमको रात भर खड़े खड़े रखते हैं। टाँगें रह जाती हैं। अपनी थकावट का ख़याल नहीं। चिन्ता है तो यह कि तुमको चैन मिले। कहीं ऐसा न हो कि तुम रो उठो।

देखो, तुम्हारी ख़ुशी में माता-पिता को खुशी है और तुम्हारे रञ्ज में उनको रञ्ज है। अगर तुम मुसकराते हो तो वे हँस पड़ते हैं। जब तुम्हारी मुरझाई सूरत देखते हैं तब उनका भी हृदय कुम्हला जाता है। ज़रा तुम्हारी सूरत बहाल देखी कि हर्ष के मारे फूल गये। ज़रा तुमको उदास पाया तो काँटे के समान सूख गये। भला माता-पिता से अधिक कौन तुम्हारे हित का चाहनेवाला होगा? वे आप ख़राब खाना खाते हैं पर तुमको अच्छा खिलाते हैं। आप मोटा झोटा पहनते हैं पर तुमको अच्छा पहनाते हैं। जहाँ तक हो सकता है तुम्हें ख़ुश रखते हैं।

देखो, तुम्हारी माता तो तुमको पिता से भी अधिक प्यार करती है। तुम उसी के पास सोते हो, उसी के साथ खाना खाते हो। वही तुम्हारी हरदम रक्षा करती है। एक मिनट तुमको आँखों से ओझल नहीं होने देती। तुम्हारे पाख़ाना पेशाब को वही साफ़ करती है। तुम्हारा तो हिसाब ही निराला है। तुम न आव देखते हो न ताव; जहाँ चाहते हो पेशाब कर देते हो, जहाँ चाहते हो पाख़ाना फिर देते हो। यदि रात को तुम्हारी माता के वस्त्र भीग जाते हैं तो वह तुम्हारे नीचे सूखा वस्त्र करके स्वयं भीगे पर पड़ रहती है पर तुम्हें दुःख नहीं देती।

देखो जब तुम कुछ बड़े हो जाते हो और पैरों चल उठते हो तब तुम्हारे माता-पिता को बड़ा सुख होता है। वे तुम्हारी तोतली बतियाँ सुन कर फूले नहीं समाते। एक तुम

हो कि घड़ी घड़ी पर हठ करते हो, रोते हो, पीटते हो, पर चीज़ लेकर ही छोड़ते हो। जब और बड़े हो गये तब माता-पिता ने कष्ट उठा कर तुम्हें मदरसे बिठाला। वे तो एक एक कौड़ी जोड़ कर कमाते हैं और तुम बेधड़क खर्च करते हो। दो पैसे का खोंचा खा लिया, चार पैसे की बर्फ़ खा डाली। एक पैसा इसको दे दिया, एक पैसा उसको। महीना हुआ और तुम्हारे माता-पिता जहाँ से हो सके तुमको देते ही हैं। और तुम उन्हीं के भरोसे पर छैल-चिकनिये बने फिरते हो।

देखो तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारे साथ इतना किया है तो तुमको भी विचारना चाहिए कि तुम्हारा क्या कर्तव्य है। वास्तव में तुम्हारे ऊपर उनका बड़ा भारी ऋण है, जिसको दिये बिना तुम अपने जीवन में सफल नहीं हो सकते। परन्तु इतने बड़े ऋण का चुका देना तो तुम्हारी शक्ति के बाहर है। हाँ, यह कह सकते हो कि तुम उनकी सेवा करो; उन्हें ख़ुश रक्खो, जिससे वे इस ऋण को माफ़ कर दें। तुमको चाहिए कि जब तुम छोटे हो तो जो कुछ नेक आज्ञा वे दें उसका पालन करो, कभी उनकी आज्ञा से बाहर न हो। जिस जगह जाने को वे तुमसे निषेध करें वहाँ न जाओ। जो काम करने को कहें वह करो। जिस जगह बैठने से तुम्हें रोकें वहाँ न बैठो। हर तरह से उनको सुख पहुँचाओ।

देखो, श्रीमहाराज रामचन्द्रजी का नाम तो तुमने सुना ही होगा। उन्होंने केवल पिता की आज्ञा के पालनार्थ सारा राज्य छोड़ दिया। बस्ती को छोड़ कर जङ्गल में जा बसे। सुख को त्याग दुःख उठाया, पर पिता की आज्ञा से मुँह न मोड़ा। इसी लिए उनका नाम आज तक चला आता है। अगर तुम भी इसी

तरह अपने माता-पिता की आज्ञा पालोगे तो बड़े आदमी हो जाओगे।

जब तुम बड़े हो जाओ और कमा सको तब हर तरह से माता-पिता की सेवा करो। उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचे। अपने से अच्छा खिलाओ और अपने से अच्छा पहनाओ। माता-पिता की सेवा करने में ही तुम्हारा कल्याण है। जब वे सुखी रहेंगे तब तुमको आशिष देंगे और तुम फूल फल जाओगे। सचमुच माता पिता की आशिष में बड़ा बल होता है।

जो लोग माता-पिता को कष्ट देते हैं और उनकी सेवा नहीं करते वे बड़े अधम और धूर्त हैं। उनके माता-पिता उनको आशीर्वाद न देंगे और वे कभी फूलें फलेंगे नहीं। हा! कैसे धूर्त हैं वे मनुष्य जो अपने माता-पिता को कष्ट देते हैं। भला जब वे अपने जन्म देनेहारों का भी हित नहीं करते तब फिर किसका हित करेंगे? इन निर्लज्जों को शर्म नहीं आती कि जिन्होंने उनके साथ इतना सलूक किया; जिन्होंने उनके लिए इतने कष्ट उठाये; उन्हीं के साथ उनका यह व्यवहार! ऐसे मनुष्यों से सदा घृणा करनी चाहिए और कभी इनके पास न बैठना चाहिए।

जो लोग अपने माता-पिता की आज्ञा नहीं पालते उनकी सन्तान भी आज्ञाकारी नहीं होती। जो जिसके लिए कुआँ खोदता है वही उसमें गिरता है। आज ये अपने माँ-बाप को दुःख दे रहे हैं और उनके लड़के देख रहे हैं। कल यही लड़के बड़े होकर इनको सतावेंगे। जो जैसा करता है वह वैसा पाता है। जब इन्होंने अपने माता-पिता की सेवा नहीं की तब इनकी सन्तान इनकी सेवा कैसे करेगी। आज इन्होंने माँ बाप को कौड़ी कौड़ी के लिए तरसाया है, कल इनके लड़के इनको तरसावेंगे। देखो,

शाहजहाँ बादशाह ने अपने बाप के साथ विरोध किया था उसी का यह परिणाम हुआ कि शाहजहाँ को उसके लड़के औरङ्गज़ेब ने बुढ़ापे में क़ैद किया।

जो माता-पिता की आज्ञा नहीं पालते उनसे ईश्वर भी अप्रसन्न रहता है। क्योंकि ईश्वर की यह आज्ञा है कि माता-पिता की सेवा करो। जब तुम अपने माता-पिता की भी सेवा नहीं कर सकते तब परमपिता परमात्मा की आज्ञा कैसे पाल सकोगे? अगर कल्याण चाहते हो तो जहाँ तक हो सके अपने माता-पिता का ऋण चुकाओ और सदा उनके आज्ञाकारी पुत्र रहो, नहीं तो कुपूत कहलाओगे।

११—स्वास्थ्य

देखो, स्वास्थ्य भी कितनी अच्छी चीज़ है। जिसके पास यह अमूल्य रत्न नहीं वह जीता हुआ भी मुर्दा है। चाहे दुनिया की सारी चीज़ें प्राप्त हों पर जब तक स्वास्थ्य ठीक न हो कोई चीज़ सुख नहीं देती। एक राजा जो अपने महल में बीमार पड़ा हुआ है उस ग़रीब से जो अपने झोपड़े में मौज उड़ा रहा है किसी तरह भी अच्छा नहीं।

तुम जानते हो कि संसार की सब वस्तुएँ केवल एक शरीर को सुख पहुँचाने के ही लिए होती हैं। क्या खाना, क्या कपड़े, क्या रुपया, क्या मकान, क्या नौकर, क्या चाकर, सब शरीर ही के लिए रक्खे जाते हैं। अगर शरीर की ही अवस्था ख़राब है तो फिर इनमें से एक चीज़ भी काम नहीं आ सकती। ज्वर से पीड़ित मनुष्य के लिए महल क्या सुख पहुँचा सकता है? जिस मनुष्य की पाचन-शक्ति जाती रही उसके लिए उत्तम से उत्तम

भोजन भी फीके हैं। जिसको उठने का सामर्थ्य नहीं उसको नौकर ही क्या करेंगे ? जो गठिया से पीड़ित हो रहा है उसको वस्त्र क्या लाभ दे सकते हैं ?

जो चीज़ें स्वास्थ्य ठीक होने पर अच्छी लगती हैं वही बीमारी की हालत में विष के तुल्य हो जाती हैं। देखो, साधारणतया लड्डू कैसा मीठा और स्वादिष्ट होता है। परन्तु ज्वर की अवस्था में वही लड्डू कड़वा प्रतीत होता है और हमारा जी उसके खाने को नहीं चाहता। तन्दुरुस्त आदमी को ठंडे वायु में टहलना सुखकारक है, परन्तु रोगी को वही वायु विष का काम करता है। जब हमारी आँखें अच्छी होती हैं तब सूर्य्य का प्रकाश भला मालूम होता है; पर जब आँखें दूटने को आ जाती है तब थोड़ा सा भी प्रकाश बुरा मालूम देने लगता है। इसी लिए कहा है कि जीवन का सुख केवल उसी के लिए है जिसका स्वास्थ्य ठीक है।

जिसका शरीर पुष्ट है वही मनुष्य विचार भी सकता है। जो बीमार चारपाई पर पड़ा हुआ पीड़ा के मारे चिल्ला रहा है वह बेचारा गूढ़ बातों को कैसे सोच सकेगा। पठन-पाठन और विद्या-सम्बन्धी जितने काम हैं वे सब केवल पुष्ट शरीरवाले ही कर सकते हैं। जो रोगी हैं उनका सिर किताब उठाते ही चकराने लगता है; आँखों में पानी आ जाता है और थकावट हो जाती है। इसलिए जो लोग विद्या-सम्बन्धी कार्य्यों में लगे रहते हैं उनको अपना स्वास्थ्य ठीक रखना चाहिए।

बहुत-से लोगों का विचार है कि स्वास्थ्य ईश्वर की दी हुई वस्तु है; हम इसके सुधार के लिए कुछ नहीं कर सकते। बीमारी या तन्दुरुस्ती तक़दीर के खेल हैं, मनुष्य इसमें क्या कर सकता है ? किसी अंश में तो यह बात सच है

कि जिस मनुष्य का शरीर जन्म से ही निर्बल है वह फिर क्या कर सकेगा। परन्तु बहुत-सी बीमारियाँ तो हम अपने गले आप मढ़ लेते हैं। बिना भूख के खाना खा लेने अथवा भूख से अधिक खा जाने से रोग उत्पन्न हो जाता है। बहुत-से अमीर तो इसी कारण अधिक बीमार रहते हैं। कहा जाता है कि भूखों इतने लोग नहीं मरते जितने अधिक खाने से मर जाते हैं।

शुद्ध वायु न मिलने, गन्दा पानी पीने और मकानों को अपवित्र रखने से भी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। देखो, क्वार के महीने में बहुत-से लोग क्यों बीमार रहते हैं? इसका कारण यह है कि वर्षा-ऋतु के पश्चात् पत्ते-पत्तियों और घास-फूस के सड़ जाने से वायु अशुद्ध हो जाता है और ज्वर को उत्पन्न कर देता है। इसलिए, अगर हम स्वास्थ्य ठीक रखना चाहते हैं तो हमें खाना, पानी और हवा तीनों को शुद्ध रखना चाहिए। जिस मकान में रहें उसके कूड़े करकट को नित्य साफ़ रक्खा करें।

काम न करने और खाली बैठने से भी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। क्योंकि ख़ाली बैठे रहने से खाना नहीं पचता। शरीर का रुधिर ख़राब हो जाता है और आदमी बीमार पड़ जाता है। इसलिए स्वास्थ्य ठीक रखनेवाले मनुष्य को नित्य प्रति काम करना चाहिए। जिनको बहुत देर तक बैठकर काम करना पड़ता है उनको चाहिए कि व्यायाम (कसरत) किया करें और सवेरे और शाम को शुद्ध वायु में भ्रमण किया करें।

अधिक सोने से भी स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है और कम सोने से भी शरीर में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। बच्चों को ८ या ९ घंटे सोना चाहिए और बड़े आदमियों को भी ६ घंटे से कम न सोना चाहिए। दिन का सोना प्रायः हानि

पहुँचाता है। रात को १० बजे से ४ बजे तक सोना स्वास्थ्य के लिए बड़ा उपयोगी है। बहुत-से मनुष्य और विशेष कर हमारे रईस रात भर तो नाच देखते हैं और दिन को सोते हैं। ऐसा करने से इनका स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। वक़्त पर थोड़ा सोना भी बे-वक़्त के बहुत सोने से अच्छा है। बहुत सोने से काहिली आती है इसलिए दिन भर चारपाई पर पड़ा रहना दरिद्र की निशानी है।

हर वक़्त उदास रहने से भी स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। अगर तुमको रंज हो तो उस पर देर तक विचार मत करो। अपने चित्त को किसी दूसरी ओर लगा दो और ऐसी बातें करो अथवा ऐसे मनुष्यों से मिलो कि तुम्हारा चित्त बँट जाय और उस शोकजनक बात का ध्यान न आवे। अगर रंज बहुत बढ़ गया हो तो देशदेशान्तर में भ्रमण करना भी उपयोगी होता है।

शराब पीने और मादक द्रव्य खाने से भी बीमारियाँ हो जाती हैं। ईश्वर ने पानी सबसे अच्छी पीने की वस्तु बनाई है। मादक द्रव्य कभी न खाओ, नहीं तो दिमाग़ ख़राब हो जायगा और विचारशक्ति नष्ट हो जायगी।

क्रोध करने और बुरी-बुरी आदतों के ग्रहण करने से भी बहुत-से रोग लग जाते हैं। तुमने क्रोधी आदमियों को कभी मोटा ताज़ा न देखा होगा। वे लोग क्रोध की आग में जलते रहते हैं और उनका रुधिर सूख जाता है। बहुत ओषधियाँ खाना भी रोगों का कारण है। जहाँ तक बने सादा भोजन करो और बिना किसी विशेष रोग के ओषधिसेवन मत करो। नहीं तो तुम्हें उनकी आदत पड़ जायगी और बिना उनके तुम एक दिन भी अच्छे न रह सकोगे।

१२—व्यायाम

यह बात भले प्रकार विदित हो चुकी है कि बिना काम किये स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता और बिना स्वास्थ्य ठीक हुए हमारी विचार-शक्ति नष्ट हो जाती है। हममें से बहुत-से आदमी ऐसे हैं जिनको रोटी कमाने के लिए सुबह से शाम तक बड़ी सख़्त मिहनत करनी पड़ती है, जैसे फावड़ा चलाना, ज़मीन खोदना, पानी देना, हल जोतना आदि। ऐसे लोग तो स्वयं ही मिहनत करते रहते हैं। परन्तु बहुत-से ऐसे हैं जिनको दिन भर कुर्सी पर बैठे-बैठे काम करना पड़ता है। यह दिन भर बैठना उनके स्वास्थ्य को बिगाड़ देता है। इसलिए ऐसे मनुष्यों को व्यायाम अर्थात् कसरत की आवश्यकता होती है।

जो लोग कसरत नहीं करते उनके शरीर में काहिली आ जाती है। कसरत करने से हाथ-पैर और शरीर के पुट्ठे बलिष्ठ रहते हैं। चुस्ती और चालाकी आती है। पाचनशक्ति ठीक रहती और वक़्त पर भूख लगती है, चित्त प्रसन्न रहता और काम करने को जी चाहता है। शरीर में रुधिर अधिक बनता है और देह सुडौल हो जाती है। एक बेडौल आदमी भी अगर रोज़ कसरत किया करे तो उसका शरीर सुन्दर निकल आता है। कसरत न करनेवाले रूपवान् भी कुरूप हो जाते हैं; कहीं से कूबड़ निकल आता है, कोई अङ्ग बढ़ जाता है; पैर तिरछे पड़ते हैं। इसलिए कसरत अवश्य करनी चाहिए।

कसरत कई प्रकार की होती है। सायंप्रातः भ्रमण करना भी एक प्रकार की कसरत है। बीमार आदमियों को बहुत हलकी कसरत करनी चाहिए या थोड़ा-सा भ्रमण ही पर्याप्त

है। परन्तु जो अच्छे हैं उनको दण्ड, मुग्दर और अन्य कसरतें भी करनी चाहिए। देशी कसरतों में दण्ड सबसे प्रसिद्ध है। पुराने लोग इसको बहुत किया करते थे। दण्ड करने से शरीर के सब अङ्गों पर ज़ोर पड़ता है। मुग्दर से हाथ के पुट्ठे मज़बूत होते हैं। परन्तु मुग्दर बहुत भारी न होने चाहिए। हलका मुग्दर जिसके नीचे का सिरा मोटा हो और जिससे झोक बड़ी लगती हो, अधिक उपयोगी है।

कुश्ती लड़ना, गदा का खेलना और बनेठी फिराना भी अच्छे खेल हैं, पर इनका रोज़ करना कठिन है। वर्षा ऋतु में थोड़े दिन कुश्ती खेलना अच्छा है।

पानी में तैरना, किश्ती खेना और घोड़े पर सवार होना भी बहुत अच्छी कसरतें हैं। जो लोग घोड़े पर खूब चढ़ते हैं उनकी टाँगें मज़बूत और शरीर फुर्तीला होता है। आज-कल अँगरेज़ लोग घोड़े की सवारी को बहुत पसन्द करते हैं। पुराने समय में क्षत्रिय लोग भी घोड़े पर सवार होकर ही हवा खाते थे। बग्घी पर चढ़ कर हवा खाने से घोड़े पर हवा खाना अच्छा है। क्योंकि बग्घी पर निचला बैठना पड़ता है और व्यायाम का लाभ नहीं हो सकता।

अँगरेज़ी खेलों में सबसे अच्छे और मशहूर खेल हैं :— किरकिट, फुटबाल, हाकी, पोलो और टेनिस। पोलो घोड़े पर खेली जाती है। फुटबाल और हाकी में दौड़ना खूब पड़ता है। दौड़ने से दिल मज़बूत हो जाता है। टेनिस में मिहनत तो बहुत नहीं पड़ती पर स्त्रियाँ भी शरीक हो सकती हैं, क्योंकि यह बड़ा हलका खेल है।

शरीर के मुख्य मुख्य अङ्गों की पुष्टि के लिए डम्बल भी बड़े उपयोगी होते हैं, पर इनको जितना हो सके धीरे-धीरे

करना चाहिए। जो लोग डम्बलों से जल्दी-जल्दी कसरत करते हैं उनको कुछ लाभ नहीं होता। धीरे-धीरे और थोड़ा-थोड़ा करो, लेकिन हर रोज़ करो तो अवश्य लाभ होगा।

कसरत करने की आदत बचपन से ही डालनी चाहिए। बहुत-सी मातायें यह समझती हैं कि उनके बच्चे कसरत करने से बीमार हो जायँगे। यह उनकी बड़ी भूल है। निचला बैठने से बीमारी होती है न कि कसरत से। जो बच्चे छोटेपन से ही कसरत करते हैं उनका शरीर बड़े होने पर बड़ा सुडौल होता है। कसरत को वृद्धावस्था तक जारी रखना चाहिए।

भारतवर्ष में आज-कल कसरत की तरफ़ स्त्रियों का तो बिलकुल ही ध्यान नहीं है। वे समझती हैं कि कसरत करना उनका काम नहीं। यदि कोई उनसे कसरत करने को कहे तो हँसी समझती हैं। एक तो मकान के भीतर बन्द रहना, दूसरे कसरत न करना, इसी से उनकी तन्दुरुस्ती बिगड़ जाती है। भारतवर्ष की १०० में ९९ स्त्रियाँ रोगी रहती हैं। इसका कारण उनकी अविद्या है। जिस प्रकार मनुष्यों को कसरत की ज़रूरत है उसी प्रकार स्त्रियों को है। देखो अँगरेज़ों की स्त्रियाँ घोड़े पर चढ़तीं, टेनिस खेलतीं और अन्य कसरतें करती हैं; इसी से उनका शरीर चुस्त रहता है। हिन्दुस्तान के बड़े घरों की स्त्रियों से चला तक नहीं जाता। मेरी सम्मति में क्या स्त्री, क्या पुरुष, क्या बच्चा, क्या बुड्ढा सबको कसरत करनी चाहिए।

१३—क्रोध

मनुष्य की बुरी आदतों में एक आदत क्रोध भी है। हमको क्रोध उस वक्त आता है जब कोई हमें हानि पहुँचावे या हमारे

कथन के विरुद्ध काम करे। जिस मनुष्य को क्रोध आता है उसका चेहरा तमतमा जाता है, आँखें लाल हो जाती हैं, साँस जल्दी जल्दी चलने लगती है, शरीर में कँपकँपी आ जाती है। क्रोध का होना ही बताता है कि अमुक मनुष्य में बल नहीं है। जो लोग बलवान् होते हैं उन्हें क्रोध भी कम आता है।

क्रोध में मनुष्य बुद्धि से काम नहीं ले सकता। उसे अपना पराया कुछ नहीं सूझता। एक साथ जो चाहता है कर बैठता है। क्रोध वास्तव में एक नशा है। जैसे शराब पीकर मनुष्य अन्धा हो जाता है उसी तरह क्रोध से भी वह अन्धा हो जाता है। जब क्रोध उतर जाता है तब पछताता है कि हाय मैंने ऐसा क्यों किया।

एक समय एक मनुष्य के पास एक अच्छा कुत्ता था। एक दिन जब वह बाहर से आया तो देखा कि वह कुत्ता, लोहू से भरा हुआ मुँह लिये उसके मिलने को चला आ रहा है। इसके देखते ही उसने समझा कि इस दुष्ट ने मेरे लड़के को खा लिया। क्रोध के मारे उसका मुँह लाल हो गया और न आव देखा न ताव, झट तलवार से उसका सिर उड़ा दिया। इतने में बच्चा भी सोते से जग पड़ा और रोने लगा। जब इसने रोने का शब्द सुना तो इधर उधर देख कर मालूम किया कि वस्तुतः उस कुत्ते ने लड़के को नहीं मारा किन्तु एक भेड़िया, जो बच्चे के खाने के लिए आया था, चारपाई के नीचे मरा पड़ा है। इस दृश्य को देख कर वह बड़ा पश्चात्ताप करने और रोने लगा कि हाय जिस कुत्ते ने मेरे बच्चे की जान बचाई उसी को आज मैंने मार डाला! यह सब क्रोध ही का नतीजा था।

यही एक क्या, क्रोध से अनेक नुकसान हो जाते हैं। जब एक छोटी-सी बात पर एक बादशाह दूसरे से क्रुद्ध

हो जाता है तो सहस्रों की जानें जाती हैं। बहुत-से भाई एक दूसरे से लड़ कर सिर फोड़ बैठते हैं। इसलिए क्रोध से सदा बचना चाहिए।

जिस समय तुमको क्रोध आवे उस समय उस वस्तु से जिस पर क्रोध आया है अलग हो जाओ और थोड़ा-सा ठण्डा पानी पीलो। अलग होकर विचार करने लग जाओ और अपने मन को उधर से हटा दो। अगर तुम्हारी आदत ही क्रोध की पड़ गई है तो रोज़ रात को इस पर थोड़ी देर विचार करो और ईश्वर से प्रार्थना करो कि यह आदत तुमसे चली जाय।

क्रोध का एक कारण यह भी है कि लोग अपने आपको दूसरों से बड़ा और अधिक बुद्धिमान् समझ लेते हैं। ऐसे लोग अपनी बात को अच्छी और दूसरे की बात को बुरी समझते हैं। इसलिए अगर कोई इनके विरुद्ध बात कहता है तो इनको क्रोध आ जाता है। इसकी निवृत्ति इस तरह हो सकती है कि हम दूसरे की बात पर विचार करना और उसका सहन करना सीखें। थोड़े दिनों में क्रोध करने की आदत छूट जायगी।

जहाँ तक बने क्रोध को पहले से ही रोको और कभी प्रकट न होने दो। क्योंकि अगर एक दफ़े प्रकट हो गया तो फिर तुम्हारे रोके न रुकेगा। क्रोध करने से मनुष्य का बल जाता रहता है और वह अपने शत्रु पर विजय नहीं पा सकता। क्रोध की सबसे अच्छी दवा विचार है।

१४—अभिमान

जिस तरह क्रोध बुरी आदत है इसी प्रकार अभिमान भी एक बुरी आदत है। अभिमान उस आदत का नाम है जिसके

कारण हम मनुष्य अपने आपको बहुत बड़ा समझने लगते हैं। यह अभिमान होता तो सब मनुष्यों में है परन्तु किन्हीं में थोड़ा होता है और किन्हीं में बहुत। जब तक हम अपने को उतनाही समझते रहें जितने हम हैं उस समय तक तो हम कुछ बुरा नहीं करते। परन्तु जब इससे अधिक बढ़ गये तब यह हमारे लिए दुःखदायी हो जाता है।

बहुत-से मनुष्य यह समझते हैं कि दुनिया में डेढ़ अक्ल उनकी है और आधी अन्य सब मनुष्यों की। ऐसे लोग अपने को सबसे अधिक विद्वान, अपनी बात को सबसे बड़ी और अपने कामों को सबसे उत्तम मानते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि थोड़े ही दिनों में सब लोग इनसे घृणा करने लगते हैं और इनकी सहायता नहीं करते। कहावत है कि बेटा बन के सबने खाया है और बाप बन के किसी ने नहीं खाया। अगर तुम किसी की सहायता चाहते हो तो उससे नीचे बन के उसके पास जाओ। जब पहले से ही तुम उससे बड़ा होना चाहते हो तब वह तुम्हारी मदद कैसे करेगा। अभिमानी लोग कभी कुछ विद्या भी प्राप्त नहीं कर सकते। एक फ़ारसी का कवि कहता है कि अगर तुम कुछ सीखना चाहते हो तो ख़ाली आओ। यदि भरे आओगे तो क्या सीखोगे? अर्थात् सीखने की इच्छा करने से पहले यह अभिमान हृदय से निकाल दो कि तुम बहुत जानते हो।

देखो, जो मनुष्य अभिमानी है वह दूसरों को अपनी दृष्टि में तुच्छ समझता है और उनसे घृणा करता है। उसके घृणा करने से वे भी उससे घृणा करने लगते हैं, क्योंकि संसार का व्यवहार यही है कि तुम जैसा जिसके साथ करोगे वैसा पाओगे। यह तुम्हारी भूल है कि तुम अपने को बड़ा समझते

हो। संसार में कोई यह नहीं कह सकता कि मुझसे बड़ा कोई नहीं। एक से एक बड़ा मौजूद है। हाँ, सबसे बड़ा ईश्वर ही है। सच है, ऊँट जब तक पहाड़ तले होकर नहीं निकलता उस वक्त तक जानता है कि मुझसे बड़ा कोई नहीं। इसी प्रकार जो मनुष्य दुनिया को विचार-दृष्टि से नहीं देखते वे अपने को बहुत बड़ा समझते हैं।

अभिमानी मनुष्य दुनिया के दिखलाने के लिए अपनी शक्ति से अधिक काम सिर पर उठा लेता है। उसे वास्तव में अपनी शक्ति का अन्दाज़ा ही नहीं होता। वह समझता है कि मैं सब कुछ कर सकता हूँ परन्तु उससे होता कुछ नहीं। इसलिए अन्त में उसकी हँसी होती है और वह लज्जित होकर निराश हो जाता है। यदि यह निराशा बार-बार हुई तो उसका जीवन ही बिगड़ जाता है और उसकी सब शेख़ी किरकिरी हो जाती है।

अभिमानी लोगों को अपना अभिमान रखने के लिए झूठ और बनावट की भी आदत पड़ जाती है। बहुत-से ऐसे निर्धन मनुष्य दूसरों के दिखलाने के लिए ऋण ले लेकर अच्छे वस्त्र पहनते और बन ठन कर निकला करते हैं। थोड़े दिन तक उनका भेद किसी को मालूम नहीं होता, परन्तु थोड़े दिनों में क़लई खुल जाती है और उनको लज्जित होना पड़ता है।

अभिमानी लोग दूसरों की अच्छी शिक्षा को ग्रहण नहीं करते। वे समझते हैं कि उनसे अधिक कोई नहीं समझ सकता। इसी लिए वे आपत्तियों में फँस जाते हैं। देखो, लङ्का का राजा रावण बड़ा अभिमानी था। जब वह श्रीमहारानी सीता जी को चुरा कर ले गया तब उसके भाई विभीषण ने उसे बहुत समझाया। परन्तु वह मन्दमति तो अभिमान के नशे में

चूर था। उसने किसी की न सुनी और अन्त में जो उसका परिणाम हुआ उसे संसार जानता है। देखो अकड़ कर मत चलो, नहीं तो गिर जाओगे।

कहावत है कि "अधजल गगरी छलकत जाय"। इस प्रकार जो तुच्छ मनुष्य होते हैं वेही बहुत अकड़ते और डींगें मारते हैं; परन्तु जो पुरुष भारी भरकम हैं वे अपनी मर्यादा को नहीं त्यागते। तुच्छ मनुष्य थोड़े-से काम करने पर भी अपने को बहुत समझने लगते हैं। जब तुम किसी को अभिमान करते और डींगें मारते देखो तब समझ लो कि इसमें कुछ भी नहीं है; यह भीतर से ख़ाली है। क्योंकि ठोस चीज़ कभी बोला नहीं करती।

देखो, अगर तुम कभी कोई बड़ा काम करो तो उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद दो जिसने तुम्हें इस काम के योग्य बनाया। परन्तु अपने दूसरे भाइयों को, जो तुम्हारी बराबर काम नहीं कर सकते, नीच मत समझो। सम्भव है कि आज तुम बड़े हो, कल ईश्वर की कृपा से वे बड़े हो जावें, तो फिर तुम्हें लज्जित होना पड़ेगा। बहुत-से लोग थोड़ी-सी विद्या पाकर तथा थोड़ा-सा दान करके अपने काम को इधर-उधर गाते फिरते हैं। बुद्धिमान् आदमी ऐसे पुरुषों को मूर्ख समझ कर उनका मान नहीं करते। इसलिए ऐसा न करो।

अभिमान तो सर्वथा छोड़ने ही के योग्य है। परन्तु यह न समझना चाहिए कि हम अपने को इतना नीच बना दें कि लोग हमसे घृणा करने लगें। अभिमान और आत्मगौरव में बड़ा भारी भेद है। आत्मगौरव तो अच्छी चीज़ है। जिसमें आत्म-गौरव नहीं वह मनुष्य न तो अपने आचार, व्यवहार ठीक कर सकता है और न किसी उत्तम काम के करने में सफल हो

सकता है। अपनी इज़्ज़त आप करनी चाहिए। तात्पर्य यह है कि जैसे तुम हो वैसा ही अपने को प्रकट करो। अच्छे काम करो, परन्तु अभिमान न करो।

१५—मितव्यय अर्थात् किफ़ायत

अपनी आय (आमदनी) से कम व्यय (ख़र्च) करना मितव्यय है। बिना धन के हमारा काम नहीं चल सकता। ख़र्च करना तो एक निश्चित बात है परन्तु आमदनी होना निश्चित नहीं। सम्भव है कि किसी समय में आमदनी न भी हो। इसलिए जब जब आमदनी हो, उसमें से थोड़ा फिर के लिए अवश्य बचा लेना चाहिए। जो ऐसा नहीं करते वे सदा दुःख उठाते हैं।

बुद्धिमानों का कथन है कि मितव्यय स्वाधीनता की माता है। जो मनुष्य प्रतिदिन कुछ न कुछ बचाता है वह कभी किसी के अधीन नहीं रहता, परन्तु जो ऐसा नहीं करता उसे क्षण-क्षण पर उधार लेना पड़ता है। उधार लेकर मनुष्य दूसरे के अधीन हो जाता है। जिससे रुपया उधार लिया जाता है उसकी निगाहों में लेनेवाले की इज्जत नहीं रहती और कभी-कभी तो कहीं उधार भी नहीं मिलता और बड़ा क्लेश उठाना पड़ता है।

जो लोग आमदनी से थोड़ा ख़र्च करते हैं, वे ही दूसरों की सहायता कर सकते हैं। अगर तुम्हारे पास कुछ और नहीं तो तुम दूसरों के साथ क्या ख़ाक करोगे? जितने दानी लोग हो गये हैं वे सब अपनी आय से थोड़ा ख़र्च करते थे। मन्दिर, कुएँ, धर्मशाला आदि ऐसे ही लोगों के बनाये हुए हैं। जिनका

ख़र्च आमदनी से अधिक है वे तो नित दूसरों के सम्मुख हाथ फैलाते रहते हैं और उधार लेते-लेते इनकी आदत पड़ जाती है। जब उधार नहीं मिलता तब दूसरी कुचेष्टायें सूझती हैं। चोरी करते हैं, रिश्वत लेते हैं, धोखा देते हैं और ऐसी ही बहुत-सी बुराइयाँ करते हैं। इसलिए जहाँ तक हो सके, आमदनी से कम ख़र्च करो।

ऊपर कहा जा चुका है कि सम्भव है, एक समय तुम्हें आमदनी न हो। ऐसी चार अवस्थायें हो सकती हैं। किसी अकस्मात् ख़र्च का आ पड़ना, उद्यम का छूट जाना, बीमारी का आ जाना, और मर जाना।

गृहस्थी में रह कर अकस्मात् ख़र्च बहुत-से आते रहते हैं। कहीं किसी की शादी है, कहीं किसी का कुछ है। कहीं कोई महमान आ गया, कहीं किसी सम्बन्धी को सहायता की आवश्यकता हुई। अब अगर तुम पहले से थोड़ा ख़र्च करते हो और तुम्हारे पास कुछ पूँजी है तो तुमको कुछ कष्ट नहीं होने का। परन्तु यदि तुम कोरे क़ल्लाँच हो तो सिवा लज्जित होने के कर ही क्या सकते हो। सब दिन एक से तो होते नहीं; सम्भव है कि अकाल ही पड़ जाय और तुम्हें अन्न में ही दूना तिगुना व्यय करना पड़े। अब अगर तुम्हारे पास रुपया है तो भला, नहीं तो छठी तक की याद आ जायगी और भूखों मरना पड़ेगा।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि उद्यम छूट जाता है। अगर तुम खेती करते हो और वर्षा न हुई तो एक वर्ष तक तुमको कुछ आमदनी न होगी और लगान घर से देना पड़ेगा। अगर तुम्हारे व्यापार होता है तो भी सम्भव है कि एक बार तुम्हें लाभ के बदले हानि हो। यदि तुम नौकरी करते हो तो

कभी किसी अपराध पर महीने दो महीने के लिए छूट सकते हो। अब अगर तुम्हारे पास रुपया हो तो कुछ दिन भली भाँति व्यतीत कर सकते हो। परन्तु यदि हर महीने पहली तारीख़ पर निगाह रहती है कि जब लावें तब खावें तो ऐसी दशा में भूखों मरोगे। इसलिए हमेशा कुछ पल्ले डालते रहना चाहिए।

बीमारी और मृत्यु भी किसी के हाथ में नहीं। न जाने कब आ जावें। बीमारी में तो उद्यम छूट ही जाता है और जैसा ऊपर कहा गया, बड़ा कष्ट होता है। आमदनी कुछ नहीं और ख़र्च बहुत। कहीं डाक्टर की फ़ीस, कहीं हकीम की नज़र, कहीं दवा आती है, कहीं दारू। जिधर देखो ख़र्च ही ख़र्च। अब अगर रुपया नहीं तो खटिया में पड़े सड़ते रहो और बाल-बच्चे भूखों मरते रहें। अगर कहीं मृत्यु हो गई तो और भी बेढब आ अटकी। छोटे छोटे बच्चे भूख के मारे बिलकते हैं, पैसा कफ़न तक को पास नहीं। हो तो हो कैसे। अगर ऋण रह गया तो सात पीढ़ी की आँसी बिँध गई।

इसी लिए बुद्धिमानों ने कहा है कि हमेशा आय से कम व्यय करो, कुछ न कुछ पल्ले डालते रहो। परन्तु यह हो तभी सकता है जब एक एक पैसे का ध्यान रक्खो। बहुत-से लोग यह ख़याल करके कि यह चीज़ केवल एक पैसे की ही आती है ख़र्च कर देते हैं। वे यह नहीं समझते कि पैसा पैसा करके बहुत हो जाता है। एक तालाब में से यदि एक एक बूँद पानी बाहर जाय तो थोड़े दिनों में सब ख़ाली हो जायगा। इसी तरह एक एक पैसा करके तुम्हारी सब आमदनी ख़र्च हो जायगी और अन्त में तुम्हें पछताना पड़ेगा।

बहुत-से लोग बनावट के लिए बहुत-सा धन व्यय कर देते

हैं। बनावट बहुत बुरी चीज़ है। अगर तुम्हारे पास हो तो अच्छा पहन लो, अच्छा खा लो। अगर नहीं है तो कुछ मत करो। व्यर्थ कामों में एक पैसा भी ख़र्च न करो। क्योंकि यदि व्यर्थ कामों में धन चला जायगा तो ज़रूरी बातों में ख़र्च की कमी हो जायगी। हमारे देश के माता पिता अपने बच्चों के विवाहों में तो बहुत-सा धन ख़र्च कर देते हैं पर जब उनसे पढ़ाने के लिए कहो तो कहते हैं कि हमारे पास ख़र्च नहीं; हम ग़रीब हैं।

जिस चीज़ की बहुत ज़रूरत न हो उसे कभी मोल न लो। बहुत-से लोग नीलाम में ऐसी सस्ती चीज़ों को ले लेते हैं जिनकी उनको आयुपर्य्यन्त आवश्यकता नहीं होती। यह उनकी बड़ी भूल है। व्यर्थ चीज़ सस्ती भी कभी न लेनी चाहिए। अगर तुम इन सब बातों की ओर ध्यान दोगे तो तुम्हें कभी कष्ट उठाना न पड़ेगा।

हाँ, इसके सम्बन्ध में एक बात और याद रखनी चाहिए। मितव्यय का यह अर्थ नहीं, कि हम कंजूसी करें। बहुत-से मनुष्य ख़ूब धन होते हुए भी खाने पीने तक को तङ्ग हैं। यह बात ठीक नहीं, क्योंकि रुपया रखने के लिए नहीं है। इसे आवश्यक कार्य्यों में अवश्य ख़र्च करना चाहिए। व्यर्थ ख़र्च करना बुरा है न कि आवश्यकीय बातों में ख़र्च करना भी।

१६—समय

जिस प्रकार धन का व्यर्थ ख़र्च करना बुरा है उसी प्रकार समय का भी व्यर्थ खोना हानिकारक है। हमारा जीवन क्षण क्षण का योग है। यदि यह क्षण नष्ट हो जाय तो जीवन भी

नष्ट हो जायगा। इसलिए हर एक पल को काम में लगाना चाहिए।

देखो समय धन से भी बहुमूल्य है। धन को तो हम फिर भी कमा सकते हैं परन्तु जो समय बीत गया वह फिर नहीं आ सकता! अगर तुमने अपना लड़कपन खेल-कूद में खो दिया और पढ़े नहीं तो क्या फिर लड़कपन तुमको मिल जायगा? किसी ने सच कहा है कि "गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं" जब मरने का समय निकट आता है तब चाहे सारा देश लुटा दो लेकिन जीवन का एक मिनट भी बढ़ नहीं सकता। दुनिया में कोई ओषधि ऐसी नहीं जो एक पल और हमको जीवित रख सके। जब यह हाल है तब यह हमारी मूर्खता है कि हम अपना समय व्यर्थ खो देते हैं।

समय से बढ़कर दुनिया में कोई भी वस्तु नहीं। जिसने अपने जीवन का एक पल भी व्यर्थ नहीं खोया वह बड़ा भाग्यवान् है। हमारे जीवन की सफलता समय के अच्छी तरह व्यय करने पर निर्भर है। कितने मूर्ख हैं वे लोग, जो समय की कुछ परवा नहीं करते। जिसने बालकपन में विद्या नहीं पढ़ी वह जवानी में क्या करेगा? और जिसने जवानी में धर्म नहीं किया वह बुढ़ापे में सिर पीटेगा।

हर काम के लिए एक वक़्त और हर वक़्त के लिए एक काम नियत होना चाहिए। कोई काम बे वक़्त मत करो। बहुत-से लोगों का कोई वक़्त ही नहीं, जब चाहें खावें जब चाहें सोवें। ऐसे मनुष्य काहिल हो जाते हैं। अगर हर काम के लिए तुमने एक वक़्त नियत कर लिया है तो तुमको खाली बैठने की आवश्यकता न होगी और न किसी काम को भूलोगे। जब वह समय आवेगा तुम्हें काम स्वयं ही स्मरण हो जाया करेगा।

परन्तु यदि सब कार्य्यवाही अनियत ही होवे तो कुछ ठीक न होगा। हर समय के लिए एक काम अवश्य होना चाहिए। इससे आदमी का मन बुरी बातों की ओर नहीं जाता। अगर तुम्हारे पास कुछ काम करने को नहीं है तो बुरी बुरी बातें सूझेंगी।

वक्त रबर के समान है। अगर इसको सिकोड़ो तो छोटा हो जाय और अगर फैलाओ तो बड़ा। बहुत-से लोग कहा करते हैं कि हमको समय नहीं मिलता। वास्तव में समय न मिलने का कारण यह है कि वे नियमानुसार काम नहीं करते। इधर बातें कीं, उधर गपशप हाँकी और वक्त गुज़र गया। वक्त को लोग चोर का दृष्टान्त दिया करते हैं। यह चुपके से दबे पाँव निकल जाता है और जाता हुआ मालूम नहीं पड़ता। हाँ, अगर नियमपूर्वक काम किया जाय तो वही वक्त बहुत मालूम होने लगता है। देखो जिस दिन को तुम गप्पाष्टक में उड़ा देते हो उसी दिन में नियमानुसार काम करनेवाली रेलगाड़ी कई सौ मील चल लेती है। वही दिन तुम्हारे लिए छोटा और रेल के लिए बड़ा है।

लोग घंटे बचाना तो चाहते हैं पर मिनटों की परवा नहीं करते। अगर तुम एक एक मिनट को तुच्छ समझ कर खो दोगे तो तुम्हारा सब समय व्यर्थ ही नष्ट हो जायगा। तुम तो समझते हो कि आध घंटे में क्या हो जायगा, चलो बात ही कर लें। परन्तु तुम यह नहीं जानते कि इसी तरह आध आध घंटा करके समस्त जीवन व्यतीत हो जाता है। एक मिनट को तुम तुच्छ समझते हो परन्तु इसी एक मिनट पर तुम्हारी सफलता निर्भर है। देखो अगर एक मिनट पीछे तुम स्टेशन पर पहुँचो तो गाड़ी निकल जायगी और तुम्हें समस्त दिवस पड़ा रहना

पड़ेगा। अगर तुम इम्तिहान के कमरे में एक मिनट पीछे आओगे तो तुम्हें इम्तिहान में कोई न लेगा और तुम्हारा एक वर्ष व्यर्थ जायगा। अगर तुम्हारा कोई मित्र मरने के निकट है और तुमने एक मिनट की देर कर ली तो तुम कभी उसको न देख सकोगे। अब कहो, एक मिनट ने तुम्हें कितनी हानि पहुँचाई? अगर तुम इसका ख़याल रखते तो कितना लाभ होता।

नेपोलियन बोनापार्ट हमेशा वक्त पर काम किया करता था। कभी एक मिनट को भी व्यर्थ न खोता था। इसी लिए वह इतना बड़ा आदमी हो गया। परन्तु एक बार उसके जनरल की पाँच मिनट की देरी ने उसका सारा काम बिगाड़ दिया। जब वह लड़ाई लड़ रहा था, उसने अपने जनरल को सेना-सहित नियत समय पर आने का हुक्म दिया था। इस जनरल कमबख़्त ने पाँच मिनट की देरी कर ली। इतनी देर में भाग्य उलटा हो गया और नेपोलियन क़ैद कर लिया गया। थोड़ी देर में वह जनरल आया, परन्तु अब क्या हो सकता था। कहावत मशहूर है कि—

"अब पछताये कहा होत जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत"।

घड़ी की लोग क़द्र नहीं करते। भारतवर्ष में तो लोगों ने इसको केवल एक आभूषण समझ रक्खा है। वस्तुतः घड़ी बड़े काम की चीज़ है। इसका मूल्य तो थोड़ा है परन्तु यह सैकड़ों रुपये बचा देती है। इसकी आज्ञा पर चलनेवाला बहुत-से काम कर सकता है। यह हमको हमेशा बताती रहती है कि हमारा जीवन व्यतीत हो रहा है, काम को जल्दी करना चाहिए। वे लोग मूर्ख हैं जो और गहनों की तरह घड़ी को भी जेब में डाल लेते हैं पर उससे काम नहीं लेते। हमको चाहिए कि

समय का बड़ा खयाल रक्खें और जहाँ तक हो सके इसको व्यर्थ न जाने दें।

१७—जीवों पर दया

संसार में मनुष्य को छोड़कर कोई और प्राणी ऐसा नहीं जो परमार्थ और परोपकार के विषय में सोच सकता हो। और जितने हैं वे सब के सब स्वार्थ को ही जानते हैं। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि न केवल अपनी ही जाति के साथ भलाई करे किन्तु अन्य प्राणधारियों को भी सुख पहुँचावे। यदि वह ऐसा नहीं करता तो स्वार्थवश होकर पशु कहलाने का अधिकारी हो जाता है।

इस लेख में हमको यह विचार करना है कि हमारा व्यवहार पशु-पक्षियों के साथ कैसा होना चाहिए। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो हमारी-सी जान सबके है। सब हमारे समान खाना खाते, पानी पीते, सोते और डरते हैं। जिस तरह यदि हमको कोई मारे तो हमें पीड़ा होती है इसी प्रकार यदि कोई इनको मारे तो इन्हें पीड़ा पहुँचती है। इन सब बातों पर विचार करने से ज्ञात होता है कि हमको पशुओं के साथ दया का व्यवहार करना चाहिए।

थोड़ी देर के लिए विचार करो कि ये जानवर हमको क्या लाभ पहुँचाते हैं। बहुत-से तो ऐसे हैं जिनके बिना हमारा जीवन ही नष्ट हो सकता है। जैसे गाय को ले लो। हम गाय का दूध पीते हैं और इसके बच्चों अर्थात् बैलों से खेती करते हैं। अगर आज हिन्दुस्तान में बैल न होते तो एक बीघा खेती भी नहीं हो सकती थी। फिर मनुष्य क्या खा कर जीते? यह

गाय की ही बरकत है जिससे हम बैठे मूँछों पर ताव दे रहे हैं। कभी दूध पीते हैं, कभी दही खाते हैं, कभी मक्खन, कभी मलाई, कभी खीर और कभी खोया। बैलों ने खेत जोता, बैलों ने बोया, बैलों ने खलियान चलाया और भूसा तो स्वयं खाया, अन्न हमको दिया। देखो कितने लाभ की चीज़ एक गाय है। फिर यहीं तक नहीं, ताँगा गाड़ी आदि सवारियों में भी बैल ही काम आता है।

घोड़े के लाभ उन लोगों से पूछो जो इस पर चढ़ना जानते हैं। ओहो! घोड़ा कैसा स्वामिभक्त होता है। अपने स्वामी का पीठ पर चढ़ाये इधर-उधर ले जाता है। लड़ाइयों में घोड़ा ही सहायता करता है। यही तोपें खींचता है, यही बारबरदारी के काम में आता है। कहीं कहीं यह हल भी जोतता है। यही हाल बकरी, भेड़, भैंस आदि का है।

कुत्तों के लाभ तो अँगरेज़ों से पूछना चाहिए। अँगरेज़ लोग कुत्ते को इतना पसन्द करते हैं कि शायद बिरला ही अँगरेज़ ऐसा होगा जिसके पास कुत्ता न हो। वास्तव में कुत्ता बड़े काम की चीज़ है। वह अपने स्वामी के लिए ऐसे-ऐसे विचित्र काम करता है जिनको देखकर आश्चर्य्य होता है। रात को आप पड़े सोते रहिए, कुत्ता आपकी रखवाली करेगा। चाहे स्वयं मर जाय पर आपकी एक चीज़ भी किसी को न छूने देगा।

यह तो रहा जानवरों का व्यवहार हमारे साथ। अब हमको भी देखना है कि हम इनके साथ क्या सलूक करते हैं। पहले तो बहुत-से हममें से इनको मार कर ही खा जाते हैं। गाय, बैल, भैंस, बकरी, भेंड़, कबूतर, बटेर आदि सहस्रों रोज़ मारी जाती हैं और हम ऐसे निर्दयी हैं कि दम-भर में चट

कर जाते हैं। फिर रहे सहे जो मारने से बचते हैं उनके साथ बड़ा बुरा बर्ताव होता है। हम तो मकान के भीतर चैन से सोते हैं पर ये बेचारे रात-भर सर्दी में बाहर ठिठुरते हैं। हम तो माल खाते हैं पर इनको वही रूखा सूखा, वह भी जब चाहा तब दे दिया, नहीं तो खबर भी न ली। जिन लोगों ने इक्केवालों को अपने टट्टू मारते देखा है वे कह सकते हैं कि इक्केवाला पशु है या टट्टू पशु। मीलों दुपहरी में भगाना, उस पर सोटों की मार, उस पर भी चारे में कमी! अगर इक्के का हाँकने-वाला नौकर है तो वह रातब भी आधा ही खिलाता है।

जानवरों को अकसर पानी तो मैला ही पिलाया जाता है और शुद्ध वायु की इनके लिए कुछ परवा ही नहीं की जाती। इसलिए इन बेचारों को बहुत-सी बीमारियाँ लग जाती हैं। जब तक ये काम देते रहते हैं तब तक तो काम लिया जाता है तत्पश्चात् कसाई के हवाले किए जाते हैं जो शीघ्र ही उनकी बोटी बोटी अलग कर उन्हें इस संसार के दुःखों से छुटकारा देता है।

सहस्रों जीव केवल शिकार के बहाने मारे जाते हैं। आपका तो खेल होता है और इन बेचारों की जान जाती है। अच्छा खेल है कि आप खुश होते हैं और दूसरा तड़प-तड़प कर मर रहा है। यही नहीं, और बहुत-से खेल मनुष्य ने ऐसे निकाले हैं जिनसे बेचारे जानवरों को कष्ट मिलता है। कहीं कोई साँड़ लड़ाता है, कहीं तीतरबाज़ी होती है। लोग खड़े हँसते हैं और ये बेचारे बेज़बान दुःख पाते हैं। वास्तव में मनुष्य के लिए इससे बड़ा पाप कोई नहीं।

वेदों में लिखा है कि सब प्राणियों को अपना मित्र समझो, किसी को दुःख मत पहुँचाओ। जब ये पशु तुम्हारे साथ इतना

प्रेम करते हैं तब तुमको भी इनके ऊपर दया करनी चाहिए, नहीं तो कृतघ्नता का पाप तुम पर चढ़ेगा। प्राचीन समय में भारतवर्ष के लोग पशुओं पर बड़ी दया किया करते थे, तभी इनके यहाँ घी, दूध बहुत होता था। आज पशुओं को दुःख मिलने से घी, दूध का टोटा हो गया और घी, दूध के न मिलने से बल और पराक्रम लोगों में से चला गया। प्राचीन लोग गाय, कुत्ते, कौआ और चींटी आदि को भोजन दिया करते थे। देखो अहल्याबाई ऐसी दयाशील रानी थी कि चिड़ियों के लिए पके खेत बिना काटे छुड़वा देती थी।

हमको चाहिए कि पशुओं पर सदा दया करते रहें और उनको किसी प्रकार का कष्ट न होने दें। ये बेचारे न बोल सकते हैं और न अपना दुःख-दर्द दूसरों पर प्रकट कर सकते हैं। इनको ईश्वर ने हमारे अधीन बनाया है इसलिए हमको उचित है कि इनको सुख पहुँचावें; नहीं तो ईश्वर हमसे अप्रसन्न होगा और हमको इसका दण्ड देगा।

१८—बच्चों को ज़ेवर पहनाना

भारतवर्ष में बच्चों को जेवर पहनाने का रिवाज बहुत बढ़ गया है। माता-पिता अपने अपने बच्चों को रूपवान् बनाने के लिए हाथों में कड़े, कानों में बाले और गले में कण्ठा आदि पहना देते हैं। इससे उनका यह भी आशय होता है कि जो कोई देखे वह यह जान ले कि हम बड़े अमीर हैं। जब कोई विवाह आदि होता है तब बहुत-से ग़रीब लोग पड़ोसियों का गहना माँगकर अपने बच्चों को पहना देते हैं। और जिस पर कम गहना होता है उसी की कम इज्जत होती है।

वास्तव में गहना पहनाना माता-पिता की बड़ी भूल है। पहले तो गहना पहननेवाले बच्चों को अभिमान हो जाता है। वे अपने आपको दूसरों से बड़ा समझते और अकड़ कर चलते हैं। इसलिए उनमें वह नम्रता नहीं रहती जो बच्चों का स्वभाव होना चाहिए। जब शुरू से ही बच्चों को शेखी करने की आदत हो जाती है तब वे यथोचित विद्या नहीं पढ़ सकते।

बहुत भारी गहना पहनने से बच्चों के शरीर की बढ़ोतरी मारी जाती है। बचपन में बच्चा दिन दूना रात चौगुना बढ़ता है। जितनी बढ़ोतरी बचपन में होती है उतनी फिर कभी नहीं होती। अब अगर उनके हाथों में कड़े पड़े हैं तो कलाई में निशान पड़ जायँगे और रुधिर का बहाव भली भाँति न हो सकेगा। बाला आदि पहनाने से बच्चों के कान बढ़ जाते हैं। शरीर के जिस अङ्ग में ज़ेवर पहनाया जाता है उसमें मैल भी हो जाता है जो स्वास्थ्य के लिए बड़ा हानिकारक है।

ज़ेवर से जो सबसे अधिक हानि होती है वह यह है कि सहस्रों निरपराध बच्चों की जान जाती है। रोज़ ऐसे मुक़द्दमे सुने जाते हैं जिनमें लोग ज़ेवर के लालच में आकर बच्चों को मार डालते हैं। माता-पिता बेचारे जब यह हाल सुनते हैं तब सिर पीट कर रोते हैं। पर यह नहीं जानते कि यह उनका ही क़सूर था। अगर वे बच्चों को गहना न पहनाते तो इस तरह उनकी जान न जाती। जिन बच्चों पर गहना नहीं होता वे निर्भय होकर इधर उधर विचरते हैं और उनका कोई बाल तक बाँका नहीं कर सकता। इधर उधर फिरने से उनका स्वास्थ्य भी ठीक रहता है।

माता-पिता को जानना चाहिए कि बच्चों का सबसे अच्छा

भूषण विद्या है। विद्या से भूषित बच्चों को और किसी भूषण की आवश्यकता नहीं। और जो बच्चा विद्याशून्य है उसको चाहे कितना ही ज़ेवर से लाद दो वह मूर्ख ही रहेगा। जो लोग अपना धनाढ्यपना दिखलाने के लिए बच्चों को ज़ेवर पहनाते हैं वे बड़े मूर्ख हैं। पहले तो अपनी अमीरी दिखलाने की कोई जरूरत नहीं। अगर तुम्हारे पास बहुत-सा धन है तो दूसरे को क्या? दूसरे को यदि तुम्हें ज़ाहिर ही करना है तो भूखे नङ्गों को दान करके धनाढ्यपन का परिचय दो। सोना, चाँदी शरीर पर लादने से केवल मूर्ख ही तुम्हारा मान करेंगे। इज़्ज़त गुणों की होनी चाहिए, न कि धन की। यदि इस पर भी लोग अपने धन को प्रकट ही करना चाहते हैं तो हमारी समझ में एक ऐसी तरकीब है कि जिसमें साँप मरे न लाठी टूटे। अर्थात् काग़ज़ पर लिख कर हर मनुष्य को अपनी आमदनी का हिसाब अपने बच्चों के गले में लटका देना चाहिए। इससे लोगों को उनके धन की भी सूचना हो जायगी और बच्चों को भी किसी प्रकार की हानि न हो सकेगी।

बहुत-से लोग बच्चों को गहना तो बहुत-सा पहना देते हैं, परन्तु कपड़ों की ओर कुछ ध्यान नहीं देते। समझने की बात है कि गहना बच्चों को सर्दी गर्मी से नहीं बचा सकता। जितना लोग गहने में खर्च करते हैं उसका दसवाँ भाग भी अगर कपड़ों में व्यय किया करें तो अच्छा होगा।

१६—स्त्री-जाति को पढ़ाना

आज-कल हमारे देश में स्त्रियों के पढ़ाने का रिवाज नहीं है। दूसरे देशों में स्त्री और पुरुष दोनों ही पढ़ते हैं। प्राचीन

काल में यहाँ भी स्त्रियाँ पढ़ा करती थीं। इसलिए हमको देखना चाहिए कि स्त्रियों का पढ़ाना अच्छा है या बुरा।

पहले तो हमको यह विचारना चाहिए कि क्या पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी विद्या की आवश्यकता है। देखो विद्या एक उत्तम रत्न है जिसके बिना स्त्री हो या पुरुष, वह पशु के तुल्य होता है। बिना विद्या के न तो हम यह जान सकते हैं कि हम क्या हैं, न ईश्वर को पहचान सकते हैं और न अपना भला-बुरा समझ सकते हैं। इसलिए पुरुष और स्त्री दोनों को विद्या की आवश्यकता है। बिना पढ़े मनुष्य अन्धा होता है और पढ़कर उसकी चार आँखें हो जाती हैं।

बहुत से लोग कहते हैं कि स्त्रियों का काम रोटी पकाना, चौका करना और बच्चों को सँभालना है, इसलिए इनको विद्या की ज़रूरत नहीं। मगर यह उनकी बड़ी भूल है। रसोई आदि घर के काम भी उसी वक़्त अच्छे होते हैं जब विद्या होती है। रसोई बनाना भी एक विद्या है। इसके ऊपर बहुत-सी पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। अगर स्त्रियाँ पढ़ी हों और इन पुस्तकों को पढ़ सकें तो अच्छी रसोई बना सकती हैं। रसोई बनाने के लिए भी इस बात का ज्ञान ज़रूरी है कि कौन-सी वस्तु का कैसा गुण है। और इसके लिए विद्या की ज़रूरत है।

यह कहना भी ठीक नहीं है कि स्त्रियों का काम केवल रसोई बनाना है। आज कल भी धनाढ्य घरों की स्त्रियाँ रसोई नहीं बनातीं। उनका दिन भर गपशप और व्यर्थ बातों में कटता है। यदि वे पढ़ी होतीं तो किताबें पढ़ने से अपना जी बहलातीं। जब ऐसी स्त्रियों के पास करने को कोई काम नहीं होता तो वे आपस में लड़ती हैं। यह बात मशहूर है कि स्त्रियाँ लड़ाकी होती हैं। परन्तु इसका कारण उनकी अविद्या है। अगर वे

पढ़ी लिखी हों तो उत्तम कथायें एक दूसरे को सुनाकर समय व्यतीत करें।

बच्चों के पालने के लिए तो सबसे अधिक विद्या की ज़रूरत है। बच्चा जैसे लोगों में रहता है वैसी ही नक़ल करता है। तुमने देखा होगा कि गाँव के बच्चे गाँव की सी बोली बोलते हैं और शहर के शहर की सी। वे जैसी बात सुनते हैं उसका वैसा ही अनुकरण करते हैं। अब अगर उनकी मातायें पढ़ी हों तो वे शीघ्र पढ़ जाते हैं और अगर वे मूर्ख हैं तो उनके बच्चे भी मूर्ख होते हैं। इसलिए बच्चों के पालन के लिए भी स्त्रियों को पढ़ाने की आवश्यकता है।

जब स्त्रियाँ पढ़ी नहीं होतीं तो अपने भाई बहन और पति आदि को चिट्ठी पत्री भी नहीं भेज सकतीं। अक्सर दूसरे लोग, जिनसे यह बेचारी पत्र लिखवाती हैं, कुछ का कुछ लिखकर धोखा दे देते हैं। कई बार ऐसा हुआ है कि बाहर से आई हुई चिट्ठी का भेद दूसरों ने जान लिया और चोरी करके ले गये। अब अगर स्त्रियाँ पढ़ी हों तो कभी ऐसा न हो।

बहुत-से लोग कहते हैं कि अगर स्त्रियाँ भी पढ़ेंगी तो हम क्या करेंगे। उनसे पूछना चाहिए कि अगर स्त्रियाँ भी भोजन करेंगी तो तुम क्या करोगे। भाई! जिस तरह उनका भोजन किया हुआ तुम्हारे पेट में नहीं आ जाता इसी तरह तुम्हारी विद्या उनके पेट में नहीं पहुँच सकती। जिस तरह तुमको विद्या की ज़रूरत है इसी तरह उनको भी।

बहुत-से लोग कहते हैं कि पढ़कर स्त्रियाँ बिगड़ जाती हैं। परन्तु उनकी यह भूल है। विद्या मनुष्य को सुधारती है, बिगाड़ती नहीं। विद्या पढ़ने से स्त्रियों को भले-बुरे और धर्म-

अधर्म का ज्ञान हो जाता है और वे धूर्तों के फन्दे से प्राय: बच सकती हैं।

इसलिए सब मनुष्यों को चाहिए कि वे लड़कों की तरह लड़कियों को भी विद्या पढ़ावें। देखो, हमारी सरकार ने हर जगह लड़कियों की पाठशालायें खोल दी हैं जहाँ स्त्रियाँ ही पढ़ानेवाली होती हैं। अगर हम अपनी लड़कियों को पढ़ावेंगे तो हमारा बड़ा कल्याण होगा।

२०—देशाटन

अन्य देशों में भ्रमण करने से बड़े बड़े लाभ होते हैं। देखो, सब चीज़ें एक जगह उत्पन्न नहीं होतीं। जो आम तुम्हारे देश में होता है वह अरब और ईरान में पैदा नहीं होता। इसी तरह काबुल का मेवा और अरब का छुआरा तुम्हारे देश में नहीं हो सकता। अब देशाटन करने से सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि एक जगह की चीज़ दूसरी जगह जा सकती है। देखो बेलजियम के काँच के बर्तन तुम्हारे देश में आकर बिकते हैं और तुम्हारे देश की कपास इँगलेंड में जाकर बिकती है। अमेरिका की बाईसिकिल (पैरगाड़ी) और जापान के कपड़े तुमको देशाटन के द्वारा ही मिल सकते हैं। अगर कोई देशाटन न करता तो आज जहाँ की चीज़ तहाँ ही पड़ी रहती।

देशाटन करने से एक बड़ा लाभ यह होता है कि भूगोल-विद्या भली भाँति आ जाती है। अन्य देशों के पहाड़, नदियाँ, सड़कें और अनेक प्रकार की अच्छी अच्छी चीजें देखने में आती हैं जिनसे चित्त प्रसन्न होता है। देखो यूरोप और अमेरिका से हर साल लोग आगरे के ताजमहल, दिल्ली की मोती मस्जिद

को देखने आते हैं। यहाँ से भी बहुत-से लोग मिसर के मीनारों को देखने जाते हैं।

जिस तरह बन्द तालाब का पानी सड़ जाता है उसी तरह हमेशा एक ही जगह रहने से आदमी का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। कतिपय वैद्य और डाक्टर रोगी मनुष्यों को देशाटन की सलाह देते हैं। क्योंकि इससे जल और वायु तबदील होकर चित्त अच्छा हो जाता है। इसलिए देशाटन का एक लाभ यह भी है कि स्वास्थ्य ठीक हो।

देशाटन करने से मनुष्य को बहुत-सी नई नई बातें मालूम हो जाती हैं। जो लोग घर में पड़े रहते हैं वे कुछ भी नहीं जान सकते। पर जिन्होंने देशदेशान्तर की यात्रा की है वे अनेक बुद्धिमानों से मिलते, उनके चातुर्य को देखते और स्वयं बहुत सी बातें सीख लेते हैं। दूसरे देशों के कलाकौशल और विद्या का हाल भी जाना जाता है। देखो जापान के लोग पहले कहीं नहीं जाते थे इसलिए उन्होंने तरक्क़ी भी नहीं की थी। परन्तु अब इन्होंने इँगलैंड और अमेरिका में जा जाकर उनकी अच्छी अच्छी बातों का अनुकरण किया है, इससे उनकी बड़ी उन्नति हुई है।

प्राचीन समय में हमारे देश के लोग भी देशाटन किया करते थे। गुजरात के लोग व्यापार के लिए द्वीप द्वीपान्तर में जाते थे। सुमात्रा, जावा आदि पुरानी बस्तियाँ इन्होंने ही बसाई थीं। पर आज-कल के लोग देशाटन करना पाप समझते हैं, इसी लिए दुःख उठाते हैं। देशाटन करने से मनुष्य में सहन-शक्ति भी आती है। इधर-उधर कष्ट उठाकर मनुष्य बलयुक्त हो जाता है। देखो, अँगरेज़ इसी लिए इतने बलवान् होते हैं। परन्तु हमारे देश के लोग समझते हैं कि हमको अन्य देशों में

कष्ट होगा इसलिए, भ्रमण न करने से, ये निर्बल होते जाते हैं। अगर हम अपना सुधार चाहते हैं तो देशाटन अवश्य करें।

२१—मेले

जब किसी एक कार्य्य के लिए किसी नियत तिथि को बहुत-से आदमी किसी नियत स्थान पर एकत्र होते हैं तब उसको मेला कहते हैं। मेले हर देश में होते हैं। परन्तु सबसे अधिक मेले भारतवर्ष में देखने में आते हैं।

मेले कई प्रयोजनों से लगाये जाते हैं। पहला प्रयोजन मेला लगाने का यह है कि तिजारत को फ़ायदा पहुँचे। तुमने देखा होगा कि बहुत-से गाँवों में आठवें दिन पेंठ लगती है। इसका तात्पर्य्य केवल यही है कि आस-पास के लोग अपनी अपनी बनाई हुई चीज़ें एक जगह लावें और आपस में तबादला कर सकें। तुम जानते हो कि मनुष्य अकेला अपने लिए सब चीजें उत्पन्न नहीं कर सकता। कोई कपड़ा बुनता है, कोई खेती करता है, कोई जूता बनाता है। अब इन सबके एकत्र होने के लिए ज़रूरी है कि एक दिन नियत हो, जब सब लोग माल ख़रीद सकें। इसी लिए मेले लगते हैं। तिजारत के मेले यद्यपि हमारे देश में भी बहुत होते हैं परन्तु सबसे अधिक इनका प्रचार इँगलेंड में है। वहाँ तो हर शहर में आठवें दिन मेला लगता है।

भारतवर्ष में मेलों का कारण यह भी है कि लोग धर्म-शिक्षा के लिए किसी नदी के किनारे इकट्ठे होते हैं। आज-कल गंगाजी के किनारे साल में कई मेले लगते हैं। हरिद्वार का पर्व बड़ा प्रसिद्ध है। बड़े बड़े तीर्थों में भी मेला होता है। मथुरा

में श्रावण के महीने में हिंडोले का मेला होता है। चैत्र में रथ-यात्रा होती है। जगन्नाथपुरी में (आषाढ़ में) रथ-यात्रा मथुरा से भी भारी होती है। मालूम होता है कि पहले-पहल मेले लगने का प्रयोजन कुछ और था। नदियों के किनारे बड़े बड़े ऋषि-महात्मा रहा करते थे। इसलिए उनके उपदेश सुनने के लिए एक तिथि पर लोग वहाँ जाया करते थे। यही वह प्रयोजन है। अब वे मुनि तो नहीं रहे, किन्तु परिपाटी वही चली जा रही है। तीर्थों में देवी देवताओं की पूजा के लिए मेला होता है।

कहीं कहीं राष्ट्रीय बातों के लिए मेले हुआ करते हैं। यूनान में प्राचीन काल में इस प्रकार के मेले कई जगह हुआ करते थे। इनमें राज्य-सम्बन्धी बातों पर विचार होता था। कहीं कहीं खेल-कूद के लिए भी मेले होते हैं जहाँ लोग इकट्ठे होकर दङ्गल करते, कुश्ती लड़ते और अनेक पराक्रम दिखलाते हैं। आज-कल भारतवर्ष में रामलीला के पश्चात् इस प्रकार के मेले कई जगह होते हैं।

मेलों से कई लाभ होते हैं। एक तो इधर-उधर के लोग आपस में मिलते जुलते रहते हैं। और एक जगह की बनी हुई चीजें दूसरी जगह पहुँच जाती हैं, इससे कला-कौशल की उन्नति होती है। दूसरे दङ्गल वग़ैरह से शारीरिक अवस्था भी देश की अच्छी रहती है। इसके सिवा लोगों को देशाटन करने का अभ्यास बना रहता है।

२२—डाक

जब से गवर्नमेंट ने डाकख़ाना जारी किया है तब से लोगों को बहुत लाभ हुआ है। जब डाक न थी तब एक जगह से

दूसरी जगह ख़बर भेजने में बड़ी कठिनता होती थी। एक ज़रा से काम के लिए आदमी भेजना पड़ता था और उसका बड़ा ख़र्च पड़ता था। बेचारे ग़रीब लोग अपने दूर देश में रहते हुए भाइयों के साथ पत्र-व्यवहार न कर सकते थे। अगर कोई बीमार पड़ता तो घरवालों को उस वक़्त ख़बर मिलती थी जब वह मर जाता था। इन मुश्किलों के कारण बहुत-से लोग दूर देशों में न जा सकते थे। आदमी भेजने में भी बड़ी मुश्किल पड़ती थी। आदमी बीच में ही लुट जाते थे।

अब डाक के जारी होने से दो पैसे में हम अपने मित्रों का हाल जान सकते हैं। पहले तो यह भी डर था कि आदमी शायद हमारे भेद को दूसरे पर प्रकट कर दे। परन्तु अब कुछ डर नहीं। कार्ड पर दो हरफ़ लिख कर डाक के बम्बे में छोड़ दो, कल सरकार तुम्हारे पत्र को बिना देखे तुम्हारे मित्र के पास पहुँचा देगी।

डाक से एक शिक्षा हमको यह भी मिलती है कि अलग अलग काम करने से इकट्ठे काम करना अच्छा है। देखो डाक क्या है ? डाक केवल उस एकता का नाम है जो सब मनुष्यों ने गवर्नमेंट के द्वारा अपनी ख़बर पहुँचाने के लिए कर ली है। अगर मैं और तुम अपने पत्रों को अलग अलग नहीं भेजते तो हर बार एक एक आदमी भेजना पड़ता। अगर चाहे तो एक आदमी बहुत-से पत्र भी एक साथ ले जा सकता है। अब गवर्नमेंट ने ऐसा प्रबन्ध किया है कि हर शहर और हर क़सबे से हर दूसरे शहर और क़सबे तक हर रोज़ पत्र ले जाने के लिए आदमी नौकर हैं, जो हमेशा ख़त ले जाते हैं। उनका काम है कि चाहे वर्षा हो, चाहे धूप पड़े, वे हमेशा इस काम को करते रहें। थोड़ी थोड़ी दूर के लिए एक आदमी नियत होता है और

जिन शहरों के बीच में घोड़ा-गाड़ी या रेल चलती है वहाँ यह काम उनसे लिया जाता है। अब देखो इन आदमियों का वेतन (तनख़्वाह) किसी एक मनुष्य को नहीं देना पड़ता किन्तु सब मिल कर देते हैं।

तुम कहोगे कि डाक के लिए हमसे तो कोई चन्दा नहीं लिया जाता। फिर उनके वेतन का रुपया कहाँ से आता है? देखो, तुमको मालूम नहीं है। तुम डाकख़ाने में दो पैसा देकर कार्ड ख़रीदते हो। यही दो दो पैसा जमा होकर लाखों रुपये हो जाते हैं। इसी से डाकख़ानेवालों को नौकरी दी जाती है। पहले इँगलेंड में एक पत्र पर एक शिलिङ्ग देनी पड़ती थी, जो यहाँ के बारह आने के बराबर है। और यह शिलिङ्ग वह मनुष्य देता था जिसके पास पत्र आता था। इसलिए ग़रीब लोग बहुत कम पत्र भेजते थे, क्योंकि बारह आना देना हर मनुष्य को बुरा मालूम होता है। इसमें कुछ लोग धोखा भी देते थे। इसके सम्बन्ध में हमको एक सच्ची कहानी याद आ गई है जिसको तुम पसन्द करोगे।

एक बार इँगलेंड का एक बड़ा आदमी एक गली में टहल रहा था। इतने में एक डाकिये ने एक ग़रीब-घर के दरवाज़े पर आवाज़ दी। एक लड़की मकान से निकली और ख़त को देख कर लौटा दिया। इस बड़े आदमी को तर्स आया और उसने अपने पास से एक शिलिङ्ग देकर उसे पत्र दिला दिया। इस पर लड़की कहने लगी कि जनाब आपने शिलिङ्ग व्यर्थ व्यय की। यह पत्र मेरे भाई का है और भीतर से ख़ाली है। हम ग़रीब हैं, इसलिए हमने यह निश्चित कर लिया है कि वह पत्र भेजता रहे और मैं लौटा दूँ। जब तक ये पत्र आते रहेंगे मैं समझूँगी कि वह भला चङ्गा है।

इस बड़े आदमी ने यह देख कर—कि ऐसा धोखा देने की लोगों को ज़रूरत होती है—गवर्नमेंट से प्रार्थना की कि डाक का महसूल पैसा कर दिया जाय और यह महसूल कार्ड की सूरत में भेजनेवाले से लिया जाय। पहले तो गवर्नमेंट को शङ्का हुई कि पैसे में बहुत नुक़सान रहेगा परन्तु जब यह नियम चला तो ज्ञात हुआ कि हानि के स्थान में लाभ हुआ, क्योंकि सैकड़ों मनुष्य जल्दी जल्दी पत्र डालने लगे।

अब तो डाक में बड़ी सुगमता हो गई है। पत्र ही नहीं किन्तु रुपये, कपड़े, किताबें और दूसरी चीज़ें, थोड़ा सा महसूल देने से, एक जगह से दूसरी जगह पहुँच सकती हैं।

२३—खेती

खेती सब उद्यमों में अच्छा उद्यम है। हिन्दी में एक कहावत है कि "उत्तम खेती मध्यम बंज, निखद चाकरी भीख निदान।" अन्य कामों के बिना आदमी की बन सकती है, पर खेती बिना थोड़ी देर बनना दुर्लभ है।

दुनिया में जितने उद्यम हैं वे सब एक खेती के ही सहारे चल रहे हैं। देखो अगर खेती न की जाय तो अन्न कहाँ से आवे। अन्न न हो तो मनुष्य क्या खाय। खेती के बिना भूसा आदि भी नहीं हो सकता। इसलिए पशु भी खेती के ही सहारे जीते हैं। तिजारत आदमी उसी वक्त कर सकता है जब खेती के द्वारा अनेक चीज़ें उत्पन्न करे। जब नाज उत्पन्न ही नहीं किया तो बेचोगे क्या खाक? तिजारत किसी नई चीज़ को नहीं बनाती, हाँ केवल एक बनी हुई चीज़ को एक

जगह से दूसरी जगह डाल देती है। पर खेती नित नई चीजों को पैदा करती है।

खेती करनेवाले मनुष्य अन्य व्यापारवालों की अपेक्षा बलवान् होते हैं। खेती का काम ही ऐसा है जिसमें रात दिन शारीरिक कार्य करने की जरूरत होती है। हल जोतना, पटेला चलाना, चर्सा खींचना, पानी देना, इन सबमें बल की आवश्यकता है। जब खेत पक जाता है तब उसकी रक्षा के लिए बड़ा कष्ट सहन करना पड़ता है जिससे मनुष्य मज़बूत हो जाता है। खेती करनेवाले को कभी व्यायाम अर्थात् कसरत करने की आवश्यकता ही नहीं होती। खेती करनेवाली जातियाँ अन्य जातियों से अधिक बलवान् होती हैं।

यद्यपि स्वार्थ तो हर एक ही उद्यम में होता है परन्तु कुछ परोपकार भी उसमें अवश्य होता है। अब सब उद्यमों से अधिक उपकार खेती में है। खेती करनेवाला सारी मनुष्य-जाति की जान है। खेती न हो तो मनुष्य-जाति ही न हो। अन्न भोजन को और कपास कपड़े को खेती ही देती है। खेती के द्वारा सहस्रों मन अन्न चिड़ियाँ खा जाती हैं और उनका पालन हो जाता है। इसी लिए प्राचीन काल में खेती करनेवाले किसानों का बड़ा मान होता था। अब दुर्भाग्य से इस देश में किसानों का अपमान होता है इसलिए अच्छे मनुष्य खेती नहीं करते। आज-कल भारतवर्ष में यह पेशा मूर्ख लोगों के हाथ में रह गया है इसलिए खेती की उन्नति नहीं होती। अन्य देशों में पढ़े लिखे विद्वान् मनुष्य खेती करते और प्रतिष्ठा पाते हैं।

जो लोग खेती करते हैं वे पशुपालन भी भली भाँति कर सकते हैं। एक हल की खेती के साथ एक गाय और एक

भैंस रख लेना कोई बड़ी बात नहीं है। मज़े से दूध पिये जाओ और दण्ड किये जाओ। अगर खेती नहीं तो एक बकरी का रखना भी दरवाज़े पर हाथी बाँधने के समान है। चाहे कितनी बड़ी नौकरी पर आदमी हो वह एक दो पशुओं का पालन मुश्किल से कर सकेगा। पर खेती करनेवाले को अनेक पशु रखने में भी दुःख नहीं होता।

खेती से वायु की शुद्धि होती है। वृक्षों का स्वभाव है कि ये कार्बोनिक एसिड गैस को चूसते और आक्सीजन को छोड़ देते हैं। इसलिए मनुष्य और पशुओं की साँस से निकली हुई कार्बोनिक एसिड गैस वृक्षों के खर्च में आ जाती है और उसके स्थान पर आक्सीजन मिल कर वायु को पवित्र कर देती है। इससे मनुष्यों का स्वास्थ्य ठीक रहता है।

बहुत-से लोग समझते हैं कि खेती करना मूर्ख लोगों का काम है। पर यह उनकी बड़ी भूल है। खेती करने में जितनी विद्या की ज़रूरत है उतनी दूसरे काम में नहीं। कृषि-विद्या के सिखाने के लिए सरकार ने कई स्कूल और कालिज खोले हैं जहाँ भूमि का देखना, बीज की जाँच करना और अनेक अनेक उत्तम बातें सिखाई जाती हैं। हम लोगों को चाहिए कि पढ़ने के पीछे खेती करने में अपना मन लगावें।

२४—व्यापार अर्थात् तिजारत

खेती से दूसरे दर्जे पर व्यापार अर्थात् तिजारत है। यद्यपि व्यापार केवल एक चीज़ के बदले दूसरी चीज़ के देने का ही नाम है किन्तु इसके बिना मनुष्य-जाति का काम नहीं चल सकता। पहले यह रीति थी कि जो मनुष्य जिस चीज़ को

बनाता था उसके बदले दूसरी चीज़ अन्य मनुष्यों से ख़रीद लेता था। अब भी लोगों ने गाँवों में देखा होगा किसानों की स्त्रियाँ बहुत-सी चीज़ें नाज के बदले मोल लेती हैं। परन्तु यह रीति सुगम न थी। एक छोटी-सी चीज़ के बदले नाज या कपड़ा लिये लिये फिरना पड़ता था। पर अब रुपये की सहायता से यह काम चलता है अर्थात् हमारे समस्त व्यापार का मध्यस्थ रुपया ही है।

जो लोग तिज़ारत करते हैं उनको वणिक् या व्यापारी कहते हैं। रुपया कमाने के लिए व्यापार से अच्छी कोई चीज़ नहीं। व्यापारी मनुष्य अगर थोड़ा-सा भी लाभ उठावे तब भी थोड़े ही दिनों में धनी हो जाता है। संसार में अधिक धन उन्हीं के पास मिलेगा जो तिजारत करते हैं।

तिजारत से देशाटन को बड़ा लाभ होता है। तिजारत बिना देशाटन के हो ही नहीं सकती। व्यापार के लिए एक देश से दूसरे देश को अवश्य जाना पड़ता है। इसलिए तिजारत करनेवाली जातियाँ संसार भर में चक्कर लगाती हैं। अँगरेज़ों को देखो। ये लोग तिजारत ही के लिए दुनिया भर में फिरते हैं। जहाँ कोई नई चीज पाते हैं ले आते हैं और थोड़े से लाभ पर बेच देते हैं।

जब देश में अकाल पड़ता है तब व्यापारी लोग ही अन्य देशों से अन्न लाकर देशवालों की जान बचाते हैं। अगर तिजारत न होती तो लोग भूखों मर जाते। तिजारत ही से हम घर बैठे कोसों की चीज़ें प्राप्त कर लेते हैं। काबुल का मेवा, काश्मीर की शालें, दक्खिन के नारियल, धारीवार का कपड़ा सब तिजारत से ही मिलता है।

तिजारत करने से लोग निर्भय हो जाते हैं, क्योंकि इनको

देश-देशान्तर के लोगों से मिलना पड़ता है। सबके स्वभाव को जान जाते हैं। कष्ट सहन करने की भी शक्ति तिजारत से हो जाती है। क्योंकि देशाटन में घर का सा आराम नहीं मिलता।

तिजारत से एक देश का दूसरे देश से प्रेम भी बढ़ जाता है। आपस में जो वैर-भाव हो वह दूर हो जाता है। लोग एक दूसरे को भाई भाई समझने लगते हैं। कभी कभी आपस में विवाह आदि सम्बन्ध भी हो जाते हैं।

तिजारत से कला-कौशल की भी उन्नति होती है। जब कारीगर लोगों की बनाई हुई चीज़ें अन्य देशों में जाकर बिकती हैं और उनकी प्रतिष्ठा होती है तब उनकी हिम्मत बढ़ जाती है और वे नई नई तरकीबें निकाल कर अच्छे से अच्छा माल तैयार करते हैं।

भारतवर्ष के लोगों को अँगरेज़ों से शिक्षा लेनी चाहिए। उन्होंने तिजारत के ही ज़रिये से दुनिया के बड़े हिस्से पर राज्य किया है। देखो पहले ये लोग यहाँ तिजारत के लिए आये थे। अब होते होते यहाँ के मालिक हो गये; यह तिजारत का ही प्रभाव है।

२५—पुस्तकें

सब जानते हैं कि सत्सङ्ग अच्छी चीज़ है, पर यह दो तरह से प्राप्त होता है। एक अच्छे लोगों से मिलने से; दूसरे उनकी लिखी पुस्तकें पढ़ने से। हम दूर देश में रहते हुए अथवा मरे हुए भद्र पुरुषों से मिल नहीं सकते, उनसे मिलने का केवल एक ही उपाय है अर्थात् उनकी पुस्तकें पढ़ें।

पुस्तकें विद्या का भाण्डार हैं। पुस्तकों में प्राचीन लोगों की विचारी हुई बड़ी गूढ़ बातें भरी हैं जिनसे हम लाभ उठा सकते हैं। अगर पुस्तकें न होतीं तो अपने पूर्वजों का हाल हम न जान सकते और नित नई बातें सोचनी पड़तीं। आज-कल जितना किताबों में विद्वान् लिख गये हैं उससे आगे को हम सोचते हैं और इस तरह विद्या की नित उन्नति हो रही है।

किताबें पढ़नेवाला आदमी कभी अकेला नहीं रहता। जब उसके समीप कोई भी मनुष्य नहीं उस समय भी वह किताबें पढ़ कर उनके बनानेवालों से भेंट कर रहा है। कैसा अच्छा लगता है जब हम एकान्त में पड़े हुए नये नये विचारों को किताबों में पढ़ कर आनन्द उठाते हैं, कभी हँस जाते हैं, कभी मुसकरा उठते हैं। अनेक प्रकार के भावों की लहरें हमारे हृदय में उठती हैं और हमारा चित्त प्रफुल्लित हो जाता है। जी बहलाने की सबसे अच्छी दवा दुनिया में किताब है। यदि किताब न होती तो बहुत-से लोग मर जाते। कई विद्वान् लोग जब क़ैद कर दिये गये तब उन्होंने किताबें पढ़कर ही अपने जीवन को व्यतीत किया।

किताबें संसार में लोगों का नाम छोड़ जाती हैं। मकान और कुएँ आदि जल्द नष्ट हो जाते हैं परन्तु किताब बनानेवाले का नाम हमेशा रहता है। आज हम रामचन्द्रजी के विषय में क्या जानते हैं? उनके मकान नष्ट हो गये, उनके कर्तबों का पता तक नहीं। केवल रामायण ही उनके चरितों को हम तक पहुँचा रही है।

विद्वान् मनुष्य के लिए किताबें सबसे बड़े मित्र हैं। भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, घर, बाहर, सब हालतों में किताबें सहायता

करती हैं। परन्तु किताबें अच्छी होनी चाहिएँ। बुरी बातें जिन किताबों में लिखी हैं उनके पढ़ने से तो न पढ़ना ही अच्छा है। ऐसी पुस्तकों को न पढ़ना चाहिए। जब तुम पुस्तकें पढ़ना चाहो तब अपने से बड़े आदमियों से सम्मति ले लो। वे तुमको ऐसी पुस्तकें बता देंगे, जिससे लाभ अधिक हो और समय थोड़ा लगे।

२६—अख़बार

जो पुस्तकें नियत तिथियों पर इधर-उधर की ख़बरें छाप कर बेची जाती हैं, उनको अख़बार कहते हैं। अख़बार दैनिक (रोज़ाना), साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक भी होते हैं। ये किसी एक मनुष्य के लिखे नहीं होते, किन्तु मिल कर बहुत-से लोग इनमें ख़बरें दिया करते हैं। कभी कभी उपयोगी विषयों पर निबन्ध भी दिये जाते हैं। परन्तु इनका प्रबन्धकर्त्ता एक ख़ास मनुष्य होता है। वही उनका विशेष कर उत्तरदाता होता है। मुख्य मुख्य लेख उसी के होते हैं। उसको हिन्दी में सम्पादक और अँगरेज़ी में एडीटर कहते हैं।

सम्पादकों का काम बड़ा भारी है। वे लोग कभी कभी गवर्नमेंट के कामों पर आक्षेप भी करते हैं। ऐसा करने में इनको बड़े चातुर्य्य से काम लेना पड़ता है। अगर कोई बात झूठ लिख दी जाय तो सरकार उन पर मुक़द्दमा चला कर सज़ा देती है। सम्पादकों का कर्तव्य है कि देश को दूर दूर की लाभदायक ख़बरों से सूचित करते रहें।

भिन्न भिन्न अख़बारों के भिन्न भिन्न प्रयोजन होते हैं। मुल्की अख़बारों का यह काम है कि प्रजा का हाल राजा तक और राजा

का हाल प्रजा तक पहुँचाते रहें। यूरोप में अख़बारों की शक्ति बहुत बढ़ रही है। सम्पादक लोग जिस बात पर ज़ोर देते हैं देशवालों को वही करनी पड़ती है। लोगों को किसी काम के करने को उभारना और किसी के करने से रोकना इनका ही काम है।

बहुत-से अख़बार तिजारती होते हैं। इनमें चीज़ों का भाव, उनके मिलने का पता और व्यापार-सम्बन्धी अन्य बातें होती हैं। इनको देख कर लोगों को अनेक बाज़ार-हाटों का हाल मालूम हो जाता है जिससे तिजारत को लाभ होता है।

अन्य विद्या-सम्बन्धी अख़बारों में वर्तमान विद्वानों की निकाली हुई नई नई बातें लिखी होती हैं। इनके पढ़ने से मनुष्य को वर्तमान काल का समस्त ज्ञान मालूम रहता है। इसलिए अख़बार अवश्य पढ़ना चाहिए।

२७—शराब

शराब, जिसको हिन्दी में मद्य कहते हैं, बड़ी बुरी चीज़ है। इसने सैकड़ों घर ख़राब कर दिये और सैकड़ों गाँव उजाड़ दिये। शराब जौ वग़ैरः को सड़ा कर बनाई जाती है। सड़ाने से इसमें एक प्रकार का कड़वापन आ जाता है, जिसके पीने से लोगों को नशा आ जाता है।

नशा वास्तव में एक प्रकार की बेहोशी है जिसमें सिर चकराने लगता है और बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है; लोग भला बुरा नहीं जान सकते। आपस में गालियाँ बकते, मार-पीट करते और अनेक कुचेष्टाओं के भागी होते हैं। शराब की दूकान पर एक रोज़ जाकर देखो। कोई तो सुस्त पड़ा हुआ है, कोई आँखें

चढ़ा रहा है। कोई कीच में लोटता है और कोई गालियाँ बक रहा है।

शराब पीकर मनुष्य को अपना पराया नहीं सूझता; जो चाहे सो कर बैठता है। शराब पीने से मनुष्य का आचार, व्यवहार बिगड़ जाता है। बुद्धिमान् लोग शराब के पास तक नहीं फटकते।

शराब पीने से मनुष्य की पाचन-शक्ति बिगड़ जाती है और शरीर में अनेक रोग लग जाते हैं। जिसने एक दफ़ा शराब पी ली उसे अधिक पीने की आदत हो जाती है। बहुत-से ऐसे आदमी हैं जिनको आध घंटे भी बिना शराब के कल नहीं पड़ती। प्याले पर प्याला चढ़ाते जाते हैं—पर चाह वही बनी रहती है।

शराब एक प्रकार का विष है। जिस प्रकार विष खाने से प्यास बढ़ जाती, क़ै आती और शरीर टूटने लगता है उसी प्रकार शराब से दशा होती है। इसके पीने से शरीर थोड़ा थोड़ा क्षीण होने लगता है और मृत्यु शीघ्र ही आ जाती है।

शराब पीनेवाले अपनी आदत को रोक नहीं सकते। जब पीते पीते निर्धन हो जाते हैं तब अनेक दुराचार करके धन कमाते हैं। बहुत-से लोग अपनी सारी आमदनी को शराब में ख़र्च कर देते हैं और अपने घरवालों को भूखों तड़पाते हैं। इसलिए शराब को दुराचारों की जड़ समझना चाहिए।

बहुत-से लोगों का मत है कि प्राचीन काल में भारतवर्ष में शराब बहुत पी जाती थी। वे कहते हैं कि पहले लोग सोम की शराब पीते थे। परन्तु उनका यह कहना हमको ठीक मालूम नहीं पड़ता। वास्तव में सोम एक लता थी जिसका रस निकाल कर ऋषि-मुनि यज्ञ में पिया करते थे। सोम-रस को शराब कहना ठीक नहीं। जिस प्रकार गन्ने के रस को कोई शराब नहीं

कहता इसी प्रकार सोम-रस को भी शराब नहीं कहना चाहिए। सोम-रस वस्तुतः एक ओषधि है, जो ब्राह्मी आदि बूटियों की तरह बुद्धि के बढ़ाने में बड़ी लाभदायक है।

शराब पीने से सब लोगों को बचना चाहिए। आज-कल इसी काम के लिए हर शहर में मद्य-पान-निवारिणी सभायें जारी की गई हैं, जिनका काम यह है कि लोगों को शराब की बुराई दिखा कर उनको इससे बचावें। हम सबका कर्तव्य है कि ऐसी सभाओं में सम्मिलित हों। आज-कल मदर्सों में भी ऐसी पुस्तकें पढ़ाई जाने लगी हैं जिनमें शराब की बुराई है। प्रत्येक मनुष्य का यह मुख्य कर्तव्य होना चाहिए कि वह बालकों को ऐसी शिक्षा देता रहे कि जिससे वे सदैव शराब से दूर रहें।

२८—तमाकू

जिस प्रकार शराब एक विष है इसी प्रकार तमाकू भी विष ही है। भेद केवल इतना है कि शराब का विष शीघ्र प्रकट हो जाता है और तमाकू का देर में। इसी लिए लोग तमाकू को विष नहीं कहते। वास्तव में यह बात थोड़ी सी देर में स्पष्ट हो जाती है। देखो जो मनुष्य अफ़ीम खाया करता है वह बहुत सी अफ़ीम खाकर भी बेहोश नहीं होता। परन्तु जो अफ़ीम नहीं खाता उसको अगर थोड़ी-सी भी अफ़ीम खिलाई जाय तो बेहोशी हो जाती है। यही हाल तमाकू का है। अगर किसी मनुष्य ने तमाकू न पी हो और उसे तमाकू पिला दो तो उसका सिर चकरावेगा और क़ै हो जावेगी। इससे प्रतीत होता है कि तमाकू एक विष है।

आज-कल तमाकू का रिवाज बहुत हो गया है। स्त्री-पुरुष दोनों पीते हैं। बहुत सी जगह छोटे छोटे बच्चे भी इसका प्रयोग करते हैं। कहीं-कहीं इसको खाने और सूँघने के काम में लाते हैं। मेरी राय में जहाँ तक हो सके इसको त्यागना ही अच्छा है।

बहुत-से लोग कहते हैं कि तमाकू औषधि है। परन्तु उनको जानना चाहिए कि औषधि का नित्यप्रति सेवन करना अच्छा नहीं है। कुनैन को हमेशा कोई नहीं खाता। इसी प्रकार अगर तमाकू औषधि है तो उसे केवल रोग दूर करने के लिए पीना चाहिए। आज-कल लोग रोग की निवृत्ति के लिए इसको नहीं पीते।

तमाकू भी शराब की तरह बुद्धि के लिए हानिकारक है। इससे मनुष्य की मनन-शक्ति जाती रहती है। बच्चों पर तो इसका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है। जिस तरह गुलाब का फूल जेठ के घाम से कुम्हला जाता है इसी तरह बच्चों का गुलाब सा हृदय तमाकू पीने से सूख जाता है। तुमने देखा होगा कि निगाली में धुआँ निकलते निकलते काई-सी जम जाती है। यह क्या है? वास्तव में यह धुएँ की कीट है। बस ठीक इसी तरह मनुष्य का हृदय तमाकू का सा काला हो जाता है।

इसी नुक़सान को देखकर श्रीमान् डाइरेक्टर साहिब ने हुक्म दे दिया है कि जो लड़का तमाकू या सिग्रिट पीता हुआ कहीं पकड़ा जावे उसे दण्ड देना चाहिए। विद्यार्थियों को चाहिए कि तमाकू को कभी न छुएँ और तमाकू पीनेवाले लड़कों से भी अलग बैठा करें जिससे यह बुरी लत उनको न लग जावे।

———

२६—प्रतिज्ञा-पालन

प्रतिज्ञा-पालन मनुष्य में एक बहुत बड़ा गुण है। जो मनुष्य सदैव अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं उन्हीं का कल्याण होता है। विश्वास की जड़ प्रतिज्ञा-पालन ही है। यदि हम अपने कहे हुए पर क़ायम नहीं रहते तो लोगों का विश्वास हम पर से उठ जाता है और सब हमको मिथ्यावादी समझ लेते हैं। विश्वास उठने पर हमको अनेक प्रकार की कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं। जो कुछ हम करते हैं उसको सब झूठ मानते हैं।

देखो विश्वास से मनुष्य के कितने काम चलते हैं। सहस्रों रुपया हम एक दूसरे से बिना काग़ज़ लिखे उधार ले लेते हैं और प्रतिज्ञा के अनुसार चुका देते हैं। यदि एक बार हमारी प्रतिज्ञा झूठी हो जाय तो फिर कोई हमारा विश्वास नहीं करता। किसी कवि ने ठीक कहा है कि—

झूठे की कोई जगत में करे प्रतीति न भूल।

पहले तो किसी बात की प्रतिज्ञा न करो। यदि एक बार प्रतिज्ञा कर लो तो उसका निर्वाह अवश्य करना चाहिए। बड़े आदमी कभी अपनी बात को जाने नहीं देते। रामायण में लिखा है कि—

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जायँ पर वचन न जाई॥

देखो श्री महाराज रामचन्द्रजी ने इतने कष्ट उठाने पर भी अपनी प्रतिज्ञा का उल्लङ्घन नहीं किया। श्री महाराज हरिश्चन्द्रजी की कथा भी जगत् में विख्यात ही है। वह स्वयं भङ्गी के हाथ बिक गये। उनकी रानी उनसे पृथक् की गई। उनका इकलौता पुत्र रोहिताश्व मृत्यु की भेंट हुआ परन्तु राजा अपने

वचनों पर दृढ़ रहे। इसका फल यह हुआ कि उनको अन्त में अति आनन्द प्राप्त हुआ।

देखो संसार में बहुत-से सम्बन्ध प्रतिज्ञा पर ही निर्भर हैं। यदि प्रतिज्ञा टूट जाय तो वे सब सम्बन्ध भी नष्ट-भ्रष्ट हो जायँ। जिस समय बालक का जनेऊ होता है वह प्रतिज्ञा करता है कि मैं ईश्वर को साक्षी देकर यह प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं कभी झूठ न बोलूँगा; और चोरी आदि कुकर्म न करूँगा; ब्रह्मचारी रह कर सदैव विद्या का उपार्जन करूँगा। अब यदि ब्रह्मचारी जनेऊ को केवल एक साधारण धागा समझ ले और अपनी प्रतिज्ञाओं को भङ्ग कर दे तो न वह विद्या सीख सकता है, न किसी अन्य प्रकार की उन्नति कर सकता है।

विवाह भी एक तरह की प्रतिज्ञा ही है। स्त्री-पुरुष सज्जन लोगों के सम्मुख इस बात की प्रतिज्ञा करते हैं कि हम लोग नित्य प्रति प्रेमपूर्वक रहा करेंगे और धर्मानुसार अपना जीवन व्यतीत करेंगे। विवाहित स्त्री-पुरुषों को चाहिए कि वे सर्वदा इस प्रतिज्ञा का पालन करते रहें, जिसमें उनका कल्याण हो।

प्रतिज्ञा करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जिस बात की तुम प्रतिज्ञा कर रहे हो वह कोई बुरी बात तो नहीं है। कोई बुरा कर्म करने की प्रतिज्ञा कभी नहीं करनी चाहिए। कल्पना करो कि किसी समय तुमने, या किसी तुम्हारे मित्र ने, अमुक पुरुष के मार डालने के लिए कहा, अब चूँकि यह बुरा काम है इसलिए ऐसे कर्म की कभी प्रतिज्ञा न करो और यदि भूल चूक से कभी ऐसी प्रतिज्ञा कर भी ली हो तो ग़लती मालूम होने पर उससे हट जाओ, और जिससे प्रतिज्ञा की है उससे कह दो कि हम ऐसा पाप नहीं करेंगे।

बहुत-से लोग इस बात को भूल जाते हैं कि व्रत या प्रतिज्ञा

केवल अच्छे ही कामों के लिए होती है। चोरी आदि पाप कर्म करने की प्रतिज्ञा करना भी पाप है।

प्रतिज्ञा मन और वाणी से की जाती है। यदि तुमने अपने मन में निश्चय कर लिया कि आज से हम सदैव दीनों को भोजन दिया करेंगे वा नित्य सत्य बोलेंगे तो यद्यपि तुमने इसको दूसरों पर प्रकाशित नहीं किया तब भी तुम ईश्वर के सम्मुख प्रतिज्ञा कर चुके और तुमको इसका निर्वाह करना आवश्यक है। वाणी से कही हुई प्रतिज्ञा को तो सब ही जानते हैं और अगर इस प्रकार की हुई प्रतिज्ञा का कोई भङ्ग करता है तो लोग उसकी हँसी करते हैं। परन्तु मन में निश्चित हुई प्रतिज्ञा को ईश्वर के सिवा कोई नहीं जानता। चाहे कोई जाने या न जाने किन्तु प्रतिज्ञा का निर्वाह अवश्य करना चाहिए।

मनुष्य के हृदय में अच्छे विचार बहुत कम उठते हैं। यदि एक बार भी ऐसे विचार उठें तो हमको चाहिए कि उनको जकड़ कर पकड़ें। विचारों के पकड़ने की रीति यह है कि उनको मन में खूब सोचें और फिर इनके पूरा करने को प्रतिज्ञा करें। प्रतिज्ञा करने पर ईश्वर से प्रार्थना करें कि हे जगदीश्वर! आप हमको ऐसी शक्ति दीजिए कि हम इस उत्तम कार्य्य के करने में समर्थ हों, जिसके करने की हमने प्रतिज्ञा की है।

३०—देश-भक्ति

यदि कोई हमारे साथ भलाई करता है तो हमारे हृदय में उसके लिए एक प्रकार का प्रेम उत्पन्न हो जाता है। देखो जब तुम अपने कुत्ते को टुकड़ा डालते हो तब वह स्नेह-वश अपनी पूँछ हिलाता है और तुमसे इतना प्यार करता है कि यदि तुम

पर विपत्ति आपड़े तो अपनी जान जोखों में डालकर तुम्हारी जान बचाता है।

ऊपर के दृष्टान्त से यह नतीजा निकला कि जो तुम्हारे साथ भलाई करे उसके साथ तुमको प्रेम करना चाहिए। अब देखो देश ने तुम्हारे साथ बड़ा उपकार किया है। इसी जगह तुम उत्पन्न हुए, इसी जगह बढ़े। यहीं का तुमने अन्न खाया, पानी पिया और यहीं की वायु को तुम सूँघते रहे हो। जिस देश ने तुम्हारे साथ इतनी भलाई की हो उसकी भक्ति करना अत्यावश्यक है।

तुमको बतलाया गया है कि माता की सेवा करना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है। अब देखो मातायें तीन होती हैं। एक तो ईश्वर जो सब संसार की जननी है; दूसरे वह स्त्री जिसकी कोख में हमने जन्म लिया है; और तीसरे वह देश भी हमारी माता है जहाँ हमने जन्म लिया है। इसी लिए इसको मातृभूमि कह कर पुकारते हैं। जब देश भी हमारी माता है तब हमको देश-भक्त होना ही चाहिए।

परन्तु प्रश्न यह है कि मनुष्य किस प्रकार देशभक्त हो सकता है। बहुत-से लोग राज्य-विरोध को ही देश-भक्ति कहते हैं, पर यह उनकी भूल है। राज्य से देश की रक्षा होती है। इसलिए राजभक्त मनुष्य ही देशभक्त हो सकता है। यदि किसी देश में सुराज्य न हो तो वहाँ पापी मनुष्य बढ़ जाते हैं और अच्छे मनुष्यों को बहुत कष्ट होता है, इससे देश को बहुत हानि होती है।

देश-भक्ति में वे सब बातें शामिल हैं जिनसे देश की वृद्धि हो। इसके लिए सबसे पहली बात यह है कि हमारा आचार ठीक हो; कोई भ्रष्ट काम हम न करें। जिस प्रकार एक मछली

सारे तालाब को गंदा कर देती है इसी प्रकार एक दुराचारी समस्त देश को कलङ्कित कर देता है। जिसने अपनी चालचलन को नहीं सुधारा वह दूसरों के साथ क्या भलाई करेगा और देश की क्या भक्ति करेगा ? जलता हुआ दीपक ही दूसरे दीपकों को जला सकता है; बुझा हुआ नहीं। इसी प्रकार सदाचारी मनुष्य ही दूसरों के आचार को ठीक कर सकता है, दुराचारी नहीं। बहुत-से ऐसे मनुष्य हैं जो छिप छिप कर पाप करते हैं, और दूसरों को सता कर रुपया कमाते हैं। परन्तु जब बाहर आते हैं तो बड़ी लम्बी चौड़ी बातें बना कर अपने को देश-भक्त प्रकाशित करते हैं। परन्तु जानना चाहिए कि केवल कथन-मात्र से ही मनुष्य देश-भक्त नहीं होता। ऐसे लोगों को, जो बातें बनाना ही जानते हैं और जिनका आचार-व्यवहार ठीक नहीं है, कपटी कहना चाहिए।

सदाचार के अतिरिक्त दूसरी बात, जो देश-भक्त के लिए जरूरी है, विद्या है। स्वयं विद्या पढ़ना और दूसरों में विद्या का प्रचार करना ही उचित देश-भक्ति है। बहुत-से ऐसे मनुष्य हैं जो बेचारे दिखलाते तो कम हैं परन्तु वास्तव में देश में विद्या की उन्नति के लिए तन मन धन से कोशिश करते हैं। ऐसे लोग सराहनीय हैं, क्योंकि ये लोग प्रशंसा की परवा न करते हुए चुपचाप देशोन्नति करने में तत्पर होते हैं।

तीसरी बात देश-भक्ति के लिए यह है कि देश के दीन मनुष्यों की दीनता दूर करने के लिए कला-कौशल आदि जारी किया जाय, जिससे वे लोग ऐसे कार्य्य में संलग्न रह कर रोटी कमा सकें और साथ ही साथ दूसरे मनुष्यों के साथ उपकार करके देश-भक्त बना सकें।

सच्ची देश-भक्ति यही है कि हम देश की सेवा करें और

सब देश-निवासियों को अपना भाई समझें। बहुत-से लोग कोई छोटा-सा काम करके भी दूसरों से घृणा करने लगते हैं, पर ऐसे लोग देशभक्त नहीं हो सकते। जिन मनुष्यों ने हमारे देश में जन्म लिया है वे हमारे भाई हैं। यदि वे दरिद्र हैं और हम धनवान हैं तो हमको चाहिए कि उनका निरादर न करें और उनको भी अपने समान धन-वान् बनाने की कोशिश करें। यदि हमारे देशी भाई मूर्ख हैं और हम विद्वान् हैं तो यह दोष उन बेचारों का नहीं है जिनके पास न तो विद्या-प्राप्ति का साधन है और न वे विद्या के फल को जानते हैं। हमको चाहिए कि उनको भी विद्वान् बनावें।

३१—राज-भक्ति

जिस प्रकार हर एक कार्यालय में एक अधिष्ठाता होता है उसी प्रकार एक देश में भी एक मुख्य अधिष्ठाता होता है जिसका यह काम है कि देश भर का प्रबन्ध करे। इस अधिष्ठाता का नाम राजा है। राजा देश में सबसे बड़ा गिना जाता है, क्योंकि उससे देश के बहुत-से काम निकलते हैं। राजा के ऊपर ही देश की उन्नति का होना निर्भर है। राजा ही पापी जनों को दण्ड देकर अच्छे आदमियों को उनके पंजे से बचाता है। वही विद्या का प्रचार करता है। वही दीनों की दुर्दशा को दूर करता है। वही लोगों की चोर डाकुओं से रक्षा करता है।

हिन्दुस्तान के लोग इस समय उन विपत्तियों को नहीं जानते जो बिना राजा के एक देश में उत्पन्न हो जाती हैं। थोड़ी देर के लिए विचार करो कि अगर राजा न हो तो क्या

मुश्किलें पड़ें। पहले पहल बलवान् लोग निर्बलों पर हस्तक्षेप करें और उनके माल-असबाब को लूट कर अपना घर भरें। बेचारे निर्बल निर्दोष मारे जावें; उनकी दाद फरियाद कोई न सुने। चोर उचक्के और लुटेरे लोगों को धौरेदुपहर लूट लें। ऐसी दुर्दशा में न तो रेल हो न गाड़ी। सड़कें कौन बनावे, नहर कौन खुदावे? अकाल पड़ें तो लोग मर जावें। मारे भय के न तो किसान खेती करे, न जुलाहा कपड़ा बुने और न बनिये व्यापार करें। ऐसी मुश्किल हो कि सबका नाक में दम हो जाय।

अब बताओ, भला कौन ऐसा मूर्ख होगा कि जो बिना राजा के देश में रहना चाहता हो? जिस प्रकार जीवन का आधार वायु, अन्न और जल है इसी प्रकार उन्नति का आधार राज-प्रबन्ध है। राज-प्रबन्ध से संसार को अनेक प्रकार के सुख मिलते हैं।

थोड़ी देर के लिए, दृष्टान्त के तौर पर, हमको अपनी ब्रिटिश गवर्नमेंट पर विचार करना चाहिए और सोचना चाहिए कि इससे हमको क्या क्या सुख मिलते हैं। देखो विद्या के लिए हमारे सम्राट् ने देश भर में स्कूल और पाठशालायें स्थापित कर रक्खी हैं जहाँ युवक जन विद्या पढ़ के उन्नति कर सकें। फिर खेती और व्यापार आदि के लिए भी हर जगह सुगमता है। किसान निर्भय होकर खेती करता है। बनिया निश्चिन्त हो इधर का माल उधर और उधर का इधर कर रहा है। सड़कें नित्यप्रति बनती रहती हैं। डाकख़ाना चिट्ठी आदि के लिए काम कर रहा है और दो पैसे में सैकड़ों कोस की ख़बर आ जाती है। अब ज़रा सोचो कि ये सब बातें क्यों हैं। इसका केवल यही कारण है कि हमारा

सम्राट् हमारे ऊपर है। हमको कोई सतानेवाला नहीं है। यदि कोई हमारी चीज़ चुरावे या हमको मारे तो हम झट पुलिस के द्वारा उसको दण्ड दिला सकते हैं। हमारे अच्छे बादशाह ने पुलिस को इसी लिए नियत किया है कि बलवान् निर्बलों को न सतावें। हम रात को आनन्द की नींद सोते हैं और राज की ओर से चौकीदार पहरा देते हैं।

जो राजा हमारे लिए इतनी भलाई करता है उसके साथ हमको भी प्रेम करना चाहिए। इसी प्रेम का नाम राज-भक्ति है। हिन्दुस्तान के लोग हमेशा से राज-भक्त प्रसिद्ध हैं। हिन्दु-स्तान में राजा की भक्ति करना और उसके हित में अपने प्राण तक दे देना ही परम धर्म समझा जाता है। राजा और प्रजा के बीच पिता और पुत्र का सम्बन्ध होता है। जिस प्रकार पिता अपने सन्तान की रक्षा करता है इसी प्रकार राजा अपनी प्रजा को विपत्तियों से बचाता है। इसलिए प्रजा को चाहिए कि अपने राजा की दिल से भक्ति करे जो इसके पिता के तुल्य है।

राज-भक्त प्रजा का यह कर्त्तव्य है कि वह राजा के नियमों पर चले और उसकी आज्ञा का पालन करे। इससे दो लाभ हैं। एक तो राजा हमसे प्रसन्न रहेगा, दूसरे उन अच्छे नियमों पर चलने से हमारा जीवन भी सुधर जायगा। जो लोग राज-विरुद्ध काम करते हैं वे दुःख के भागी होते हैं। दृष्टान्त के लिए चोर को ले लो। चोर राजा को अप्रसन्न करके क़ैद तो भोगता ही है परन्तु इसके अतिरिक्त उसकी आत्मा भी मलिन हो जाती है।

हमको चाहिए कि हम अपने सम्राट् का हृदय से सम्मान करें, उनकी आज्ञा पालने तथा उनको अपनी शक्ति के अनुसार

राजप्रबन्ध में सहायता दें। जो लोग राज के विरोधी हैं और कपट छल करना चाहते हैं उनका निरादर किया करें, इसी में हमारा कल्याण है।

३२—कला-कौशल

ईश्वर ने मनुष्य को कार्य्य करने के लिए हाथ दिये। परन्तु हाथों को अन्य वस्तुओं की सहायता की आवश्यकता होती है। अगर हम केवल हाथ ही से लिखना चाहें तो कैसे लिख सकते हैं? इसी लिए आदमी ने लिखने की एक कल बनाई जिसको क़लम कहते हैं। इस कल को बढ़ाते बढ़ाते इतना बढ़ाया कि छापेख़ाने और टाइपराइटर बन गये। छापेख़ाने क्या हैं वे केवल लिखने की कल हैं।

अद्यपि आरम्भ में मनुष्य हाथ ही से कार्य्य करता है परन्तु केवल हाथ से किये हुए काम कलों की अपेक्षा भद्दे होते हैं और उनमें देर अधिक लगती है। जितनी जल्दी कलों से होती है उतनी हाथ से होनी असम्भव है। तुमने पैरगाड़ी देखी होगी जिसको अँगरेज़ी में बाईसिकिल कहते हैं। यह एक प्रकार की कल है जिसके द्वारा हम अपने पैर को एक बार घुमाने से बहुत दूर तक जा सकते हैं। केवल पैरों ही के लिए नहीं किन्तु मनुष्य ने अन्य अङ्गों के लिए भी कलें बना ली हैं। देखो दूरबीन से हमारी आँख सैकड़ों कोस की वस्तु को देख लेती है। खुर्दबीन अर्थात् सूक्ष्मदर्शक यन्त्र से हम उन छोटी से छोटी वस्तुओं को भी देख सकते हैं जो बिना इस यन्त्र के आँख से दिखाई न पड़ती थीं। इनके सिवा

ग्रामोफोन और फोनोग्राफ आदि सहस्रों यन्त्र हैं जिनसे हमारे अङ्गों को बड़ी सहायता मिलती है।

इँग्लिस्तान और अमेरिका आदि देशों में तो कलों का इतना प्रचार है कि लोग साधारण काम भी कलों के द्वारा ही करते हैं; आटा पीसना, कुट्टी काटना आदि सब बड़ी सफ़ाई से होता है। पहले समय में तो हिन्दुस्तान में भी लोग बड़ी बड़ी कलें बनाते थे। कहा जाता है कि इन लोगों के पास एक ऐसी बारीक कल थी कि जिससे एक बाल को चीर डालते थे। श्रीमहाराजा भोज के समय में एक मनुष्य ने एक ऐसा अच्छा पंखा निकाला था कि जो बिना चलाये पुष्कल वायु देता था। परन्तु आज-कल हिन्दुस्तान में नई कलें बनानेवाले मनुष्य बहुत ही कम रह गये हैं. अभी थोड़े दिन हुए कि एक हिन्दुस्तानी ने धूप से खाना पकाने की कल बनाई थी, परन्तु उसका रिवाज अभी देश में नहीं हो सका।

जिस देश में कलें अधिक हों तो समझना चाहिए कि वहाँ के लोग बहुत बुद्धिमान् हैं। क्योंकि बुद्धिमान् लोग थोड़े समय में अधिक काम करना चाहते हैं। दूसरे यह कि कलों का बनना भी बुद्धिमत्ता से ही हो सकता है। मूर्ख मनुष्य क्या कलें बनावेगा। वह तो दूसरों की बनाई हुई कलों को भी प्रयोग में नहीं ला सकता। देखो, रेलगाड़ी का इञ्जन बनाना बुद्धिमान् मनुष्य का ही काम है। फिर इससे कितने लाभ होते हैं। रुपया और समय कम लगते हैं और देशाटन सुगम हो जाता है। कपड़ा बनाने की कलों से कैसा साफ़ और बारीक़ कपड़ा बुना जाता है। यद्यपि हिन्दुस्तान में हाथ से भी लोग बहुत बारीक़ कपड़ा बनाते हैं परन्तु उससे इतनी जल्दी नहीं होती।

बहुत-से मूर्ख यह समझते हैं कि यदि कलें जारी हो गईं तो हाथ से बनानेवालों की रोज़ी मारी जायगी। जैसे अक्सर तुमने सुना होगा कि इक्केवाले रेलगाड़ी के निकलने को बुरा कहते हैं क्योंकि उससे इक्के बन्द हो जाने का डर है। पहले इँग्लिस्तान के लोग भी यही समझते थे और इस-लिए जब कभी कोई मनुष्य कलें बनाता था तो उसको मारते थे और कलों को तोड़ डालते थे। परन्तु अब वहाँ के लोग चतुर हो गये हैं और उन्होंने कलों के नफ़ा नुक़सान को समझ लिया है। कलों से किसी की रोज़ी मारी नहीं जा सकती। क्योंकि जब माल सस्ता होता है और जल्दी बनने लगता है तब सब लोगों को सुख हो जाता है और इसलिए अनेक नये काम खुल जाते हैं।

बहुत-से लोग यह कहते हैं कि कलों में खर्च अधिक पड़ता है और इसलिए वे कलों को काम में नहीं लाते। हमारे देश में एक मुसलमान विद्वान् ने जिनका नाम मिस्टर हादी है, खाँड़ साफ़ करने की एक बड़ी उत्तम कल बनाई है जिससे एक तो खाँड़ साफ़ बनती है दूसरे माल अधिक बैठता है। परन्तु हमारे देश के ज़मींदार उससे लाभ नहीं उठाते। यह ठीक है कि शुरू में खर्च अधिक पड़ेगा परन्तु अन्त में लाभ भी तो बहुत होगा। कहावत है कि थैली डालो तो थैला भरेगा अर्थात् जितना गुड़ डालोगे उतना ही मीठा होगा। रेल की कम्पनी करोड़ों रुपया लगा देती है फिर देखो लोगों को कितना आराम होता है और उनको भी करोड़ क्या अरबों बच रहते हैं। इसलिए लोगों को चाहिए कि कला-कौशल की ओर ध्यान दें; नई नई कलें बनावें; और जितनी बन चुकी हैं उनसे लाभ उठाना सीखें; तभी हमारा सुधार हो सकता है।

———

३३—परोपकार

दूसरों के साथ भलाई करने का नाम परोपकार है। परोपकार दो शब्दों से बना है। 'पर' का अर्थ है दूसरे और 'उपकार' का अर्थ है भलाई। यदि हम संसार-चक्र की ओर दृष्टि डालें तो प्रतीत होता है कि संसार में ईश्वर ने सहस्रों वस्तुएँ ऐसी बनाई हैं जो नित्यप्रति परोपकार में ही लगी रहती हैं। देखो सूर्य तड़के ही निकल कर हमको गर्मी और रोशनी देता है। चन्द्र अपने समय पर हमको प्रकाश पहुँचाता है। परन्तु ये हमसे कुछ बदला नहीं चाहते। वायु हमारे साथ कितनी भलाई करता है। जल जीवन का आधार ही है। इसी प्रकार जिस वस्तु को लो वही दूसरों के साथ उपकार करती हुई मिलती है। इन सब बातों से ईश्वर हमको यह शिक्षा देता है कि हम भी इन चीज़ों की तरह दूसरों के साथ भलाई करना सीखें।

संसार में तीन प्रकार के मनुष्य हैं। एक वे हैं जिनके साथ यदि कोई मनुष्य बुराई करे तो वे भी इसके बदले बुराई करने लग जाते हैं। दूसरे वे लोग हैं जिनके साथ यदि तुम भलाई करो तो वे भी तुम्हारे साथ भलाई करेंगे। यदि तुम उनके साथ भलाई नहीं करते तो वे भी तुम्हारे साथ भलाई नहीं करेंगे। बदले में भलाई करनेवाले मनुष्य परोपकारी नहीं कहलाते। यह तो साधारण व्यवहार ही है कि इस हाथ दे उस हाथ ले। परन्तु परोपकारी वे लोग हैं जो बिना किसी प्रकार का बदला चाहे हुए दूसरों के साथ भलाई करें। इसी प्रकार के लोग सबमें उत्तम हैं।

ईश्वर ने जितने प्राणी बनाये हैं उनमें सबसे श्रेष्ठ मनुष्य

को बनाया है। अब सोचना चाहिए कि मनुष्य में श्रेष्ठता की कौन-सी बात है। क्या केवल खाना खाने से मनुष्य श्रेष्ठ है ? खाना तो कुत्ते, बिल्ली सभी खाते हैं। सोना और डरना आदि नीच से नीच जन्तु में भी पाया जाता है। फिर ऐसी कौन-सी विलक्षण बात है जिससे कि मनुष्य को उच्च पदवी दी गई है ? सौन्दर्य्य भी इसमें कुछ ऐसा नहीं है जैसा अन्य प्राणियों में है। हरिण की आँख मनुष्य की आँख से कहीं अच्छी होती है। तोते की नाक हमारी नाक से बहुत ही उत्तम मिलेगी। कोयल की आवाज़ कितनी प्यारी होती है। परन्तु इन प्राणियों में और हममें केवल इतना भेद है कि ये दूसरों के साथ भलाई नहीं कर सकते और हम कर सकते हैं। यदि हम दूसरों के साथ उपकार न करें तो हम और पशु समान ही हैं। अपना पेट तो सभी पालते हैं और अपने बच्चों को भी सभी पालते हैं। परन्तु यदि दूसरों के साथ ऐसा किया जाय तो हम वस्तुतः मनुष्य कहलाये जा सकते हैं।

परोपकार कई प्रकार से किया जा सकता है। सबसे अच्छा परोपकार यह है कि हम दूसरों को विद्या दें। मनुजी महाराज का उपदेश है कि विद्या का दान सब दानों से बढ़ कर है। कहावत है कि—"टुक देवा मरे और सिख देवा जिये"। इसका आशय यह है कि जो मनुष्य किसी को एक रोटी खिला देता है वह उसके साथ इतना उपकार नहीं करता जितना वह करता है जो उसे शिक्षा देता है। क्योंकि रोटी से क्षण भर की भूख दूर होती है, परन्तु शिक्षा से मनुष्य आयुपर्य्यन्त के कष्टों से बच सकता है।

भारतवर्ष में लोग यह समझते हैं कि किसी को बिना किसी

काम के रोटी खिला देना ही परोपकार है। इसी लिए यहाँ पर आँखें मीच कर दान दिया जाता है। परन्तु यथार्थ में यह परोपकार नहीं है। जो मनुष्य दानपात्र नहीं है उसको दान देने से दाता पातकी होता है। इसलिए किसी के साथ भलाई करने से पहले यह देख लो कि उसको किस वस्तु की आवश्यकता है। धनवान् को धन देना ऐसा ही है जैसे सूर्य्य को दीपक दिखाना। दूसरी बिचारणीय बात यह है कि तुम्हारे भलाई करने से उस मनुष्य को कुछ हानि तो न पहुँचेगी, जैसे यदि कोई मनुष्य भूखा है परन्तु काम कर सकता है; यदि तुम उससे यह कह दो कि हम सदा तुमको खाना दिया करेंगे तो ऐसा करने से वह मनुष्य आलसी और पुरुषार्थहीन हो जायगा। इसलिए ऐसे मनुष्य को कोई ऐसा काम देना चाहिए जिससे कि उसकी रोज़ी चल सके। यही सच्चा परोपकार है।

देखो, हमारी ब्रिटिश गवर्नमेंट जब अकाल के मारे लोगों को सहायता देती है तब उनसे उनकी शक्ति के अनुसार कुछ न कुछ काम ज़रूर लेती है, जिससे उन लोगों का निर्वाह भी होता रहे और उनको मुफ़्त खाने और खटिया तोड़ने की आदत न रहे। वास्तव में यही सच्चा परोपकार है।

३४—बड़ों का सत्कार

छोटों को चाहिए कि जो पुरुष उनसे बड़े हैं उनका सत्कार करें। जब वे मिलें तब उनको नम्रतापूर्वक प्रणाम वा नमस्कार करें, जब वे घर पर आवें तब उनको उच्चासन देवें। यदि छोटे बड़ों के घर जावें तो उनसे नीचे की ओर बैठना चाहिए। यदि

कभी कोई बात करनी हो तो उजड्डपन से न करें, किन्तु नम्रता और शील-स्वभाव को काम में लावें। अपने बड़ों से बात करते समय उनकी आँख से आँख न मिलाओ, किन्तु नीची गर्दन करके बात करो।

हमारे बड़े कौन हैं। माता, पिता और गुरु तो बड़े हैं ही परन्तु जो हमसे आयु, बल, विद्या और बुद्धि में अधिक हैं वे भी हमारे बड़े हैं। जिसमें विद्या और बुद्धि है वह आयु में कम होने पर भी हमसे बड़ा है। जो शासक है वह भी बड़ा ही है।

बड़ों के साथ नम्रभाव प्रकट करने से हमको हमेशा अपनी अवस्था का ज्ञान रहता है और हम कोई ऐसा काम नहीं कर बैठते जिससे हमारी बदनामी हो। गुणवान् लोगों का आदर करने से हममें उनके गुणों के लिए श्रद्धा होती है और हम उनका अनुकरण करने लगते हैं। अनुकरण करने से हम भी गुण-सम्पन्न हो जाते हैं और जिस प्रकार हम अपने बड़ों का सत्कार करते हैं उसी तरह हमारे छोटे हमारा सत्कार करते हैं।

प्रत्येक मनुष्य चाहता है कि लोग हमारा आदर और सम्मान करें। परन्तु इस आदर के प्राप्त करने का केवल यही एक साधन है कि हम दूसरों का सत्कार करना सीखें। देखो जो पुरुष अपने माता पिता और गुरु-जन का सम्मान करता है उसके पुत्र भी उसकी देखादेखी उसका सम्मान करते हैं। परन्तु जो अपने माँ बाप से लड़ता, उनकी आज्ञा को भङ्ग करता तथा उनसे कटु वचन कहता है उसके पुत्र यह समझ लेते हैं कि माँ-बाप से ऐसा ही बर्ताव करना चाहिए और वैसा ही करते हैं। इसलिए हर मनुष्य का कर्तव्य है कि अपने बड़ों का सत्कार करे।

जो लड़का अपने गुरु का कहना नहीं मानता और उनका आदर नहीं करता, उससे गुरुजी सदा अप्रसन्न रहते हैं। ऐसे लड़के के हृदय में गुरुजी की ओर से श्रद्धा भी नहीं होने पाती और इसलिए उसे विद्या नहीं आती। जो लड़के नेक और चतुर होते हैं वे सदैव गुरुजी की सेवा करते और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं।

बड़ों का सत्कार करने से मनुष्य की प्रशंसा भी होती है। जो देखता है यही कहता है कि देखो कैसा अच्छा और शीलवान् लड़का है। जब सब लोग हमारी प्रशंसा करते हैं तब हमको बड़ा आनन्द होता है और अच्छे काम करने को हमारा जी चाहता है। यदि हम अपने बड़ों का सत्कार नहीं करते तो सब लोग हमको बुरा कहते हैं। अच्छे पुरुषों को हमसे घृणा हो जाती है और समय पड़े कोई हमारी सहायता नहीं करता।

जो बड़े और गुणवान् लोग हैं वे हमको अनेक प्रकार से लाभ पहुँचाते रहते हैं। जो विद्वान् हैं उनकी विद्या का किसी न किसी अंश में हम पर प्रभाव पड़ता रहता है। इसलिए हमारा कर्तव्य है कि इस ऋण को चुकाने के लिए हम इनका आदर करें। ऐसे पुरुषों का आदर करने से ये लोग हमको और अधिक लाभ पहुँचावेंगे।

३५—धर्म-रक्षा

उन गुणों का, जिनसे हमारी आत्मिक उन्नति हो, धारण करना धर्म कहलाता है। और जिस जिस कार्य के करने में हमारी अधोगति हो वही अधर्म है। धर्म का दूसरा नाम कर्त्तव्य है और अधर्म का दूसरा नाम अकर्त्तव्य। जिन कामों

को करना चाहिए उनको करना धर्म है और जिनको न करना चाहिए उनको करना अधर्म है ।

विद्यार्थियों का धर्म क्या है ? इनका धर्म यह है कि सब व्यसनों को त्याग कर विद्या उपार्जन करें। अपने चाल-चलन को ठीक रक्खें और आचार, व्यवहार पर ध्यान दें । जो विद्यार्थी विद्या की ओर चित्त नहीं लगाते वे धर्म से विमुख होने से अधर्मी हैं ।

गृहस्थ आदमी का धर्म यह है कि अपने गृहस्थ-सम्बन्धी कार्य्यों को बड़े प्रेम और श्रद्धा से करें, सब पर दया करें, किसी से कटु वचन न बोलें; सत्यवादी और सत्यकामी हों ।

श्री मनुजी महाराज ने, जो भारतवर्ष के एक प्रसिद्ध मुनि हुए हैं, धर्म के दस लक्षण बताये हैं । उनका कथन है कि धर्म का पहला लक्षण धृति है । धृति का अर्थ यह है कि किसी शुभ कार्य्य को आरम्भ करके उसे बीच में न छोड़े किन्तु जो आपत्तियाँ बीच में पड़ें उनका वीरता से सामना करे ।

धर्म का दूसरा लक्षण क्षमा है अर्थात् यदि कोई हमारे साथ कुछ अयोग्य बर्ताव भी करे तो हम उससे बदला न लें किन्तु उसे ऐसा उपदेश करें जिससे वह फिर ऐसा काम न करे । उसे हम क्षमा कर दें ।

तीसरा लक्षण धर्म का दम है अर्थात् अपने मन को बुरी बातों से हटाकर अच्छी बातों की ओर लगाना । कभी किसी बुरे काम का भाव भी मन में न होने देना ।

अस्तेय अर्थात् चोरी न करना धर्म का चौथा लक्षण है । किसी मनुष्य की किसी वस्तु को बिना उसकी आज्ञा के लेना चोरी है । सब जानते हैं कि चोरी पाप है, इसलिए उससे सर्वदा बचना ही चाहिए ।

शौच अर्थात् पवित्रता धर्म का पाँचवाँ लक्षण है। शरीर, वाणी और मन का शुद्ध रखना पवित्रता है। जो केवल शरीर को ही शुद्ध रखते हैं और जिनके मन कपट, छल और बुरी बातों से मलिन हो रहे हैं वे पवित्र नहीं हैं। हमको चाहिए कि शरीर को जल से, मन को सत्य से और आत्मा को विद्या तथा तप से शुद्ध करें।

धर्म का छठा लक्षण इन्द्रिय-निग्रह है अर्थात् अपनी इन्द्रियों को सदा भले कामों में प्रवृत्त करें। हमारा हाथ कभी किसी दीन को सताने को न उठे। हमारे पैर बुरे मार्ग पर न चलें। हम किसी को बुरी दृष्टि से न देखें। हमारे कान कभी असभ्य बातें न सुनें। हमारी वाणी बुरे वचन बोलनेवाली न हो।

धर्म का सातवाँ लक्षण धी है, अर्थात् ऐसी बातें करें जिससे हमारी बुद्धि प्रबल हो। आठवाँ विद्या, नवाँ सत्य और दसवाँ लक्षण अक्रोध है। धर्मात्मा मनुष्यों को चाहिए कि विद्या में अपनी प्रवृत्ति रक्खें। सत्य मानें, सत्य बोलें और सत्य ही करें। हमारा कोई व्यवहार भी असत्य और मिथ्या न होना चाहिए। जो मनुष्य छल-कपट का व्यवहार करते हैं उनकी हमेशा दुर्दशा होती है। उनका मन काला पड़ जाता है और उनका आत्मा निर्बल हो जाता है। आत्मिक उन्नति का केवल एक ही साधन है। वह यह कि हम धर्म-पथ को न त्यागें। धर्म-पथ के त्यागने से अनेक प्रकार की हानि होती है। न तो हमसे लोग ही प्रसन्न रहते हैं और न ईश्वर सहायता करता है।

जो लोग धर्मात्मा हैं वे कुल की मर्यादा को नहीं त्यागते और कोई ऐसा कार्य्य नहीं करते जिससे उनके कुल को बट्टा लगे। ऐसे कुल-भूषण लोग दूसरों पर हमेशा दया करते हैं।

उनका हृदय कोमल और चित्त उदार होता है। ईश्वर ऐसे लोगों से प्रसन्न रहता है और लोग उनसे मित्रता करते हैं। धर्मात्मा मनुष्य ईश्वर के भक्त होते हैं। नियत समय पर ईश्वर का भजन करने से उनके मन का मल दूर हो जाता है और उनका आत्मा दर्पण के सदृश शुद्ध हो जाता है।

॥ इति ॥